मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग ५

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(पाँचवाँ भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३

मोबाइल : ९४५०२२२७६७

चौथा संस्सकरण

गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०

(२० जून, २०१२)

मूल्य : २५-००

मुद्रक :

परा-वाणी प्रेस

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रमणिका

भूल-सुधार

शाबर मन्त्र संग्रह, भाग (४), पृष्ठ ३५ पर, ४६ वें क्रमाङ्क का चौथा मन्त्र—'आया बांधूं, काया बांधूं,…' वास्तव में ४७ वें मन्त्र का प्रथम मन्त्र है तथा इसके बाद और बीन मुंह में घुसेड़ने के मन्त्र के पहले दो मन्त्र छूट गए हैं। यथा—

१. बीन बन्द करने का मन्त्र

आता बांधूं, पाता बांधूं, बांधूं दशो द्वार। बन्द हो जा तूमड़ी, तुझको पवन सुर की आन। दोहाई, गुरू गोरखनाथ की।

२. बीन खोलने का मन्त्र

आता खोलूं, पाता खोलूं, खोलूं दशो द्वार। खुल जा तूमड़ी, तुझको पवन सुर की आन। दोहाई गुरू गोरखनाथ की।

विधि : इन दोनों मन्त्रों के बाद आगे के मन्त्रों का मनन करना चाहिए।

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री बलराम बली, लखनऊ (उ. प्र.)

'शाबर'-सिद्धि के सोपान

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, सागर–२

'शाबर'-मन्त्रों की साधनाएं अत्यन्त सरल और शीघ्र सिद्धि-दायिनी होती हैं। वैदिक अथवा तान्त्रिक साधनाओं के समान लम्बे-चौड़े कर्म-काण्ड आदि इनमें नहीं होते। अतः इन्हें कोई भी कम पढ़ा-लिखा या अनपढ़ आदमी भी सुविधा-पूर्वक कर सकता है। इन साधनाओं से सम्बन्धित कुछ तथ्य ऐसे हैं, जिन्हें जानना और पालन करना प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

इस विषय में कई ऐसे साधकों से जानकारी ली गई, जो 'शाबर'-मन्त्रों की ही साधना करते हैं। सारे तथ्य जो एकत्रित किए हैं, साधकों और पाठकों के ज्ञान-वर्धन हेतु यहाँ प्रस्तुत हैं। आशा है, इससे कई जिज्ञासुओं की शङ्काओं का समाधान भी हो सकेगा।

१. 'शाबर'-मन्त्रों की साधना किसी भी जाति के स्त्री - पुरुष कर सकते हैं।

२. किसी भी अन्य साधना-प्रणाली के समान ही इन साधनाओं में भी 'गुरु-देव' का सर्वोच्च स्थान है। 'मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति' पद अधिकांश मन्त्रों में मिलता है, जो 'श्रीगुरु - देव' की महत्ता को बताता है। अतः किसी भी मन्त्र की साधना 'गुरु - देव' की आज्ञा लेकर ही करनी चाहिए।

३. सभी मन्त्रों की साधना पूर्व या उत्तराभिमुख होकर करे। उच्चाटन आदि दक्षिणाभिमुख होकर करे। मुसलमानी 'शाबर'-मन्त्रों की साधना पश्चिमाभिमुख होकर करे।

४. साधना प्रातः-काल या रात्रि में करे! रात्रि का समय अधिक उत्तम है।

५. 'आसन' लाल ऊनी कपड़े या सूत का हो। रङ्ग - बिरङ्गा 'आसन' भी उत्तम होता है। इसी प्रकार पहनने के 'वस्त्र' भी श्वेत या लाल रङ्ग के होने चाहिए।

६. 'माला' कोई भी चलती है, किन्तु 'रुद्राक्ष' की 'माला' सर्वोत्तम होती है। श्रीराम, श्रीहनुमान आदि वैष्णव देवताओं के विषय में 'तुलसी' की 'माला' उत्तम होती है। मुसलमानी मन्त्रों में 'हकीक' (अकीक) की 'माला' का प्रयोग करे।

७. 'माला' का संस्कार आवश्यक नहीं। एक ही 'माला' पर कई मन्त्रों का जप किया जा सकता है।

८. 'शाबर'-मन्त्रों की साधना के समय घी या तेल का 'दीपक' अवश्य जलाए। सुगन्धित 'धूप' या 'अगर-बत्ती' भी जलानी चाहिए।

९. एक ही 'दीपक' के सामने कई मन्त्रों की साधना की जा सकती है।

१०. जहाँ 'हवन-सामग्री' का उल्लेख न हो, वहाँ सामान्य 'हवन-सामग्री', घृत या गुग्गुल (गूगल) से हवन करे। मुसलमानी मन्त्रों में 'लोहबान' (लोबान) से हवन करना चाहिए।

११. 'शाबर' - मन्त्रों की साधना में ग्रहण - काल का अत्यधिक महत्त्व है। अपने सभी मन्त्रों से ग्रहण-काल में कम-से-कम एक बार हवन अवश्य करना चाहिए। इससे वे जाग्रत रहते हैं।

१२. 'हवन' की विधि इस प्रकार है–मन्त्र पढ़कर हवन-सामग्री की आहुति देते जाएं। पहले निश्चित संख्या में जप करे, फिर 'हवन' करे।

१३. 'हवन' के लिए मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' लगाने की आवश्यकता नहीं होती। जैसा भी मन्त्र हो, पढ़कर अन्त में आहुति दे।

१४. 'शाबर मेरु-मन्त्र' का जप साधन-काल में अनिवार्य है।

१५. रक्षा - मन्त्रों की साधना भी आवश्यक है, किन्तु जो लोग तान्त्रिक कवच आदि का पाठ करते हैं, उन्हें इन 'शाबर' रक्षा-मन्त्रों की आवश्यकता नहीं है।

१६. 'शाबर'-मन्त्रों की साधना में 'नींबू की बलि' अवश्य देनी चाहिए। मन्त्र पढ़ते हुए नींबू को काटकर हवन की अग्नि में निचोड़ देना चाहिए।

१७. जहाँ मद्य, मांस आदि की आवश्यकता हो, वहाँ वे अपने प्राकृत स्वरूप में ही प्रयुक्त होते हैं। अनुकल्प नहीं चलते।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्रीहनूमान जी का शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. शिवदत्त उपाध्याय
भिसी मिर्जापुर, अलीगढ़ (उ. प्र.)

हे हनूमान की सूरत ! हाजिर हो ब-हक रामचन्द्र जी महाराज ।

विधि : स्नान कर, स्वच्छ वस्त्र पहन कर किसी एकान्त स्थान में स्वच्छ कमरे में 'कुश' या 'ऊन' के आसन पर बैठे। यदि 'मृग-छाला' या 'बाघम्बर' पर बैठे, तो अधिक अच्छा है। जिस स्थान पर आसन बिछा हो, उसके चारों ओर 'शिङ्गरफ' से एक गोला (वृत्त) खींच ले। उस गोल घेरे के भीतर ही आसन पर बैठकर साधना करे। साधना प्रारम्भ करने के पूर्व अपने मस्तक पर 'सिन्दूर

(पृष्ठ ६ का शेष)

१८. नारियल की बलि देनी चाहिए।

उक्त सारी बातें सामान्य नियमों के अन्तर्गत आती हैं। किसी भी मन्त्र के साथ उसकी जो भी विधि दी गई हो, उसका अक्षरशः पालन करना ही चाहिए। साथ ही उक्त बातों में से भी, जो उचित समझे, सम्मिलित कर लेने से लाभ ही होगा। इन सारी बातों से भी ऊपर है—आपके 'श्रीगुरु - देव की आज्ञा और निर्देशन।' उसका पालन करना अनिवार्य है।

अन्त में एक अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण बात यह है कि 'शाबर' - मन्त्रों की साधना के मध्य कभी-कभी कुछ आवाजें सुनाई पड़ती हैं। कभी-कभी भयानक दृश्य या चेहरे भी दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में कभी भी विचलित न हों, अपना जप लगातार करते रहें। थोड़ी देर में सब कुछ शान्त हो जाता है और देवता प्रत्यक्ष होकर मन्त्रोक्त सिद्धि दे देते हैं। अपना 'आसन' किसी भी स्थिति में न छोड़े, तो अवश्य ही सिद्धि मिलेगी। आसन छोड़ देने अथवा डर जाने का परिणाम घातक होगा। पागलपन या मृत्यु भी हो सकती है। अतः पूरी सावधानी, दृढ़ता और निडरता के साथ ही साधना करे।

का टीका' लगा ले। थोड़ी-सी 'लौंग' और 'इलायची' अपने पास रख ले। फिर उक्त मन्त्र का पाँच सहस्त्र (५,०००) जप एक ही बैठक में करे।

उक्त साधना रात्रि के १२ बजे से आरम्भ करे। चालीस (४०) दिनों तक नित्य यह जप करना आवश्यक है। साधना आरम्भ करने के सातवें दिन से ही इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है। साधक के समक्ष अनेक प्रकार की शक्लें प्रकट होने लगती हैं। उन्हें देखकर साधक को घबराना नहीं चाहिए। कोई भी 'शक्ल' या मुसीबत आसन के चारों ओर बनी हुई 'वृत्त-रेखा' के भीतर प्रवृष्ट होकर साधक को कोई हानि नहीं पहुँचा सकती। रेखा के बाहर निकल जाने पर अवश्य परिणाम हानि-कारक हो सकता है। अतः साधक को अपने आसन पर ही निर्भय होकर बैठे रहना चाहिए।

सभी परीक्षाओं को पार करते हुए ४० दिनों का समय पूरा हो जाने पर साधक को उपद्रव का भय दिखाती हुई शक्लें उग्र रूप में दिखाई देंगी, किन्तु वह भय-भीत न हो क्योंकि यह सब मात्र दृष्टि का भ्रम ही होगा। अन्त में साधक को आकाश से उतरता हुआ एक तख्त दिखाई देगा, जिस पर 'श्रीहनूमान जी' विराजमान होंगे। वे साधक के सामने प्रकट होकर पूछेंगे--'तू क्या चाहता है?' तब साधक को उनसे यह वचन देने की प्रार्थना करनी चाहिए कि 'मैं जब भी इच्छा करूँ, आप मेरे समक्ष प्रकट होकर मेरी मनोकामना पूर्ण किया करेंगे।'

उक्त साधना के फल-स्वरूप श्रीहनूमान जी साधक पर सदा के लिए कृपालु हो जाते हैं और उसकी कामनाएँ पूर्ण करते रहते हैं। इस साधना को करते समय और सिद्धि मिल जाने पर साधक के लिए यह 'आवश्यक नियम' है कि वह 'किसी पर भी इस बात को प्रकट न करे' कि उसने श्रीहनूमान जी की कृपा प्राप्त कर ली है। अन्यथा 'सिद्धि' समाप्त हो जायगी।

परम पूज्य श्री स्वामी अक्षोभ्यानन्द सरस्वती से प्राप्त :

सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. कृष्णानन्द मिश्र 'वैद्य'
ककरा, दुबावल, प्रयाग (उ. प्र.)

१ महा-काली शाबर मन्त्र

ॐ काली महा-काली केली कल्याभां काली स्वाहा।

विधि : त्रिकोण यन्त्र भूमि पर बनावे। राई, सरसों (सर्षप), पिपरी, करू तैल, मछली ओर मांस से आम की लकड़ी पर होम करे। मन्त्र का जप सवा लाख करने से सिद्धि। भूत-प्रेत न रहे, दूसरे के प्रयोग निष्फल हों। मन्त्र भूमि में लिखकर उसके ऊपर लकड़ी रखे। तब होम करे।

२ जादू मन्त्र

विन्दे वैताल लै मुख दीज्यो। पेट आवै, झल आवै, दइव आवै। नहीं पेट फूलि मरि जाई। मैं जो पढ़ि देव, अपने हाथ खात होई, लागै साथ उठि चलै। तुरित आदम वीर हनुमन्त जती की दोहाई। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। नृसिह की दोहाई, भैरो जती की दोहाई।

विधि : मन्त्र का एक हजार जप करे। आहुति एक हजार दे। सिद्ध कर लें, तब प्रयोग में लाए। भैरोनाथ के प्रताप से जादू सत्य होता है।

३ जलती हुई बत्ती मुख में रखना

करुवा तेल, मसाल बनावै। ओका अपने मुख माँहु नावो। मुख जरै, तो इतना दोष पावइ। ईश्वर महा - देव, गौरा - पारवती कै दोहाई, दोहाई नोना चमारिन की।

विधि : बत्ती में घी लगाकर सात बार उक्त मन्त्र से फूंके। तब उसे मुख में रखे। इस बत्ती को उगले नहीं। राम-प्रताप से जादू सत्य होगा।

४ वाण, टोना झारने का मन्त्र

बजरङ्गी वजर केवार, जहंवा रुंधा दसो दुवार। वजर कहै मैं रँगा चोंगा, एकौ वजर नहि लागै। अङ्गा कब रोह कुन्था, विद्या आई, सब टोनिहिनि मिलि वान चलाई। सीर सेधुर क जरै, कैरे खाय। सब परै टोमही के केसा। ईश्वर महा - देव कै दोहाई। मोरे झारे कष्ट रहै, तो ईश्वर महा-देव कै दोहाई।

विधि : कुशा से १० बार झारे। राम-प्रताप से पीड़ा, कष्ट दूर होता है।

५ नजर झारने के मन्त्र

(१) हनुमान चलै, अवधेसरिका वृज-मण्डल धूम मचाई। ढोना-टमर, डीठि-मूठि सबको खैंचि बलाय। दोहाई छत्तीस कोटि देवता की, दोहाई लोना चमारिन की।

(२) वजर-बन्द वजर-बन्द टोना-टमार, डीठि-नजर। दोहाई पीर करीम, दोहाई पीर असरफ की, दोहाई पीर अताफ की, दोहाई पीर पनारू की नीयक मैद।

विधि : उक्त मन्त्र से ११ बार झारे, तो बालकों को लगी नजर या टोना का दोष दूर होता है।

६ भूत-प्रेत-चुड़ैल छुड़ाने का मन्त्र

पीर साहेब भेजा पैगाम। पञ्छी उतै चले, औलिया वीन के बीच। मिलै कलमा सारी, मैं अन्धा कुछ गुण न जानों। जो गुण पावौ, जपो हृदय लगाय। कलमा पढ़त मोहि कल जो पड़तह, एवै कलमा कल नाहि कर झगड़ा। क्रोध में आवो, मारो उसका प्राण। हसन हुसैन अली कर बेटा, गाजी मियाँ, चलै फुलवरिया। जहाँ देखै दुपरिया गँवाई। लह-लह्व लह-वर काँपै, जैसे काँपै हार फुलाने। सिर पीर बला बोलेऊ औलिया कर नाउ। दोहाई गाजी मियाँ की, दोहाई लहवर की, दोहाई कलमा सारी की।

विधि : मिट्टी का चौका वृहस्पति के दिन लगाए। उस पर फूल की माला चढ़ावे; रोरी चढ़ावे। उपरि - लिखित मन्त्र पढ़कर लोहबान की धूप तीन बार डाले। घी का दीपक एक बत्ती का

जलाए। दीपक को देखते ही भूत - प्रेतादि - ग्रस्त व्यक्ति बकने लगेगा और सब हाल बताएगा।

७ शरीर-रक्षा-कारक मन्त्र

इल्लाह्-इल्लाह्-इल्लाह् कोट उठावैं। इन इल्लाह की खाँईं। अली की चौकी, मदयाहि की-दोहाई। अल्लाह, इल्लाह, इनिल्लाह, महम्मद इवा रसूललिल्लाह्।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़ने से शरीर की रक्षा होती है।

८ धतूरा मारने का मन्त्र

तू ही ब्रह्म के जाया। पुत्र पौषरि महा - देव लाए। गौरा तोहे महा - देव खाए। यह धतुरा माटी होइ जाए। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : दीवाली या किसी अमावास्या की रात्रि में उक्त मन्त्र को पढ़कर हवन करे, तो विष का प्रभाव दूर होता है।

९ बौराने का मन्त्र

राजा नैपाल के एकै बेटी। ऊ पौवै अकोत्तरो रोटी। एकै हाथे पोवै, एकै हाथे खाय। उठि के दवरि ओसारे जाय। दृष्टि बांधो, मुष्टि बाँधो। दोहाई लोना चमारिन की, दोहाईं छत्तीस कोटि देवता की।

विधि : दीवाली की रात्रि में मन्त्र का जप करे। तब प्रयोग करे। रविवार या मङ्गल के दिन सात शतावृत्ति। आहुति दशाङ्ग की दे। यह सिद्ध मन्त्र है।

१० तेल-स्तम्भन का मन्त्र

तेल थाँभो, तेलाइनि थाँभो। अग्नि-कुण्ड पैशन्दर थाँभो। पाँच पुत्र कुन्ता, प्रसङ्गोदग्न मन्त्र अग्नि भवे को भवे समति पर पिण्ड। दोहाई नरसिह कै पों दुख पावै।

विधि : उक्त मन्त्र पढ़ने से कराही का तेल स्तम्भित होता है।

११ भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र

उलटन्त भैरो, पलटन्त भैरो, चलन्त भैरो। देवरू दव रूरे। भैरो जहाँ से आए होहि, तहाँ कोटि भूत, प्रेत, डाकिनी, साकिनी,

हाकिनी, महा-मारी सेना-सहित धरहु जाइ, मारहु जाइ, आरहु जाइ। दोहाई गोरखनाथ की। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : करू (सरसों का) तेल और कोदों की भूसी से अनार की लकड़ी में होम करे। सब भूत-प्रेत भाग जाएँगे।

१२ कीड़ा झारने का मन्त्र

गरुल चढ़े, बादर घहराई। दोहाई दोहाई ईश्वर महा-देव की।

विधि : एक हाथ से जल निकाल कर उसमें तीन बार उक्त मन्त्र पढ़ते हुए अक्षत डाले। फिर कीड़ावाले रोगी को बैठाकर मन्त्र पढ़-पढ़ कर जल पर फूँके। विष उतर जायगा।

१३ तिजारी झारने का मन्त्र

ॐ बं ॐ बं बीजाय स्वाहा। दोहाई कामाख्या रानी की। दोहाई इसमाइल जोगी की। जीर्ण ज्वर झारो, तिजारी झारी, अंतरिया ज्वर चौथिया झारो। रहै तो धोबी की नाँद मिलै। झारो इसमाइल जोगिनी रच्छा भैरो चलु चलु। फलनवा के तिजारी दूरि करु। फेरि आवै, तो तुझे हनुमान की दोहाई।

विधि : उक्त मन्त्र में चौथी पंक्ति में 'फलनवा' शब्द के स्थान पर तिजारी या चौथिया आदि जीर्ण-ज्वर से ग्रस्त व्यक्ति का नाम उच्चारण कर झारे, तो ज्वर दूर होता है।

'शाबर-मन्त्र'—कुछ जिज्ञासाएँ

समाधान-कर्त्ता : 'कुल-भूषण' पं. रमादत्त शुक्ल

[१]

रायपुर (म. प्र.) के श्री सुखीराम यादव अपने कृपा-पत्र दिनाङ्क ४-१०-८३ में लिखते हैं—

"शाबर-मन्त्र-संग्रह" का प्रकाशन सामान्य साधकों के लिए बहु-मूल्य है। कृपया दो शङ्काओं का समाधान करने की कृपा करें—

प्रश्न १. शाबर मन्त्र के साधकों को क्या 'गुरु' बनाना या अनु-मति प्राप्त करना अनिवार्य है ? यदि ऐसा है, तो स्थानीय स्तर पर 'गुरु' के उपलब्ध न होने पर बार-बार पत्र - व्यवहार करने से समय व्यर्थ जायगा। यदि कोई आध्यात्मिक 'गुरु' अनुमति न दे तो ? या कोई 'गुरु' ही न बने हों ?

प्रश्न २. कई मन्त्रों की साधना-विधि ही नहीं है। जैसे भाग १, पृष्ठ २४ पर 'कुबेर भण्डार (ऋद्धि - सिद्धि) गायत्री', पृष्ठ ४४ पर 'शाबर मन्त्र दशक' तथा अन्य और भी।

उत्तर १. शाबर मन्त्र के साधकों को 'गुरु' बनाना या अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य नहीं है। यह तो साधकों के अपने हित की बात है कि किन्हीं अनुभवी मार्ग-दर्शक की सहायता पाकर साधना करें।

उत्तर २. जिन मन्त्रों की साधना - विधि का उल्लेख नहीं है, उनके सम्बन्ध में किसी विधि पालन करने की अनिवार्यता नहीं है। साधक चाहें, तो अपने सन्तोष के लिए सामान्य विधि का विधान स्वयं कर सकते हैं। उनके मार्ग-दर्शन के लिए अन्य मन्त्रों की विधियाँ प्रकाशित हैं ही।

[२]

मध्य प्रदेश के होशङ्गाबाद जनपद से एक बन्धु अपने पत्र दिनाङ्क २०-८-८३ में लिखते हैं—

प्रश्न १. 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४ में आपने जो 'सर्वथा-साधक शाबर मन्त्र' दिया है, उसमें तथा भाग २ में (पृष्ठ २१ व ७० पर)

प्रकाशित मन्त्र में क्रमशः 'घट्टा पाकर' और 'घट्टा पकर' छपा है, इसमें कौन सही है ? इसी प्रकार 'आत्म-रक्षा का मन्त्र' में (भाग २ के पृष्ठ ३५ पर) 'ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा ताला' और इसी भाग में पृष्ठ २२ पर 'ब्रह्मा का ताला' तथा (भाग १, पृष्ठ ४२ पर) 'ब्रह्मा का ताला' दिया है।

प्रश्न २. 'शाबर' मन्त्रों के बारे में कहा जाता है कि 'जैसे के तैसे' पढ़ना चाहिए—इनमें कोई फेर-बदल, किसी भी कारण से नहीं करना चाहिए। अब उक्त तीनों स्वरूपों में से, किसका अवलम्बन किया जाय ? इसी प्रकार कई दूसरे मन्त्र भी 'शाबर मन्त्र-संग्रह' के विभिन्न भागों में हैं, जिनमें अन्तर है।

प्रश्न ३. '···(भाग ३ के पृष्ठ ६३ पर) 'विवाह हेतु प्रयोग' और (भाग १ के पृष्ठ ५७ पर) 'स्वप्न में कामना-ज्ञान के क्षेत्रपाल' मन्त्र का प्रयोग मैंने किया, जो निष्फल रहे। मेरे विचार से 'काम्य-प्रयोग' के पूर्व 'मन्त्र का पुरश्चरण' आवश्यक है, जिनके विधान प्रस्तुत-कर्त्ताओं द्वारा नहीं दिए गए हैं।

प्रश्न ४. '···(भाग ४, पृष्ठ १५ पर) 'विवाह हेतु' दिए गए मन्त्र और पूर्व में आपसे पूछे गए मन्त्र में भी भिन्नता है। ऐसे में मन्त्रों के परीक्षण में बहुत समय बर्बाद होता है।

'···अतः प्रस्तुत-कर्त्ताओं से विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि वे अनुभूत मन्त्रों के बारे में स्पष्ट लिखें, जिससे अन्य प्रयोग-कर्त्ताओं में, असफलता के पश्चात्, मन्त्रों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न न हो। (भाग ४, पृष्ठ १०, मन्त्र-क्रम १ में 'आदि - पुरुषाय' है, जो मेरा अनुभूत है। यह 'उड्डीश-तन्त्र' का मन्त्र है।···मैं किसी की आलोचना नहीं कर रहा हूँ, केवल अपने विचार व्यक्त कर रहा हूँ। अतः कृपया अन्यथा न लें।···'

सम्पादक का उत्तर १. मन्त्रों के शब्दों में 'पाठान्तर' मिलना कोई नई बात नहीं है। प्रख्यात 'दुर्गा सप्तशती' के सम्बन्ध में असंख्य पाठान्तर मिलते हैं। 'कौल - कल्पतरु' पं. देवीदत्त शुक्ल ने इन पाठान्तरों को संगृहीत कर 'चण्डी' के प्रथम वर्ष के अङ्कों में प्रकाशित किया था। बाद में वे 'सप्तशती-मीमांसा' नामक पुस्तक में भी प्रकाशित किए गए। पूज्य शुक्ल जी ने आचार्यों से अनुरोध किया था

कि उक्त पाठान्तरों की समीक्षा कर 'सप्तशती' का एक सर्व - सम्मत संस्करण प्रस्तुत किया जाय, किन्तु आज तक उस अनुरोध की रक्षा के लिए किसी के द्वारा कोई प्रयास नहीं किया गया। हाँ, 'चण्डी-कार्यालय' द्वारा अवश्य 'विशुद्ध-चण्डी' नाम से 'सप्तशती' का एक शुद्ध संस्करण प्रकाशित किया गया, जिसकी न केवल साधकों द्वारा प्रशंसा हुई, अपितु 'आज उसी के द्वारा अधिकांश साधक नित्य पाठ करते हैं।'

बात यह है कि 'मन्त्र-विज्ञान' के सम्बन्ध में शोध करने के लिए जिस प्रकार की 'सर्व-साधन-सम्पन्न' संस्था की आवश्यकता है, उसका देश में सैकड़ों वर्षों से नितान्त अभाव रहा है। जब तक ऐसी संस्था अस्तित्व में नहीं आती, पाठान्तरों एवं पाठ - भेदों की समस्या बनी रहेगी। इस समस्या का समाधान साधकों को स्वयं अपने विवेक द्वारा या अपने गुरुदेव के निर्देशानुसार करना होगा। यदि सम्बन्धित 'प्रयोग' में सफलता मिली, तो 'समाधान' सन्तोष-प्रद माना जायगा। यदि सफलता नहीं मिलती, तो 'समाधान' को ठीक नहीं समझा जायगा। सफलता न मिलने से निष्ठावान् साधक में 'मन्त्र के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती', उसका ध्यान अपनी प्रक्रिया की त्रुटियों के प्रति जायगा और वह उन्हें दूर करने का प्रयास करेगा।

प्रश्न २ : शाबर मन्त्रों को जैसे के तैसा ही पढ़ना चाहिए—ऐसा उसके अनुभवी साधकों का कहना है। ऐसी दशा में यदि किसी मन्त्र के विभिन्न पाठान्तर मिलते हैं, तो जैसा प्रथम उत्तर में सुझाव दिया गया है, या तो अपने विवेक के अनुसार अथवा मन्त्र-प्रेषक के निर्देशानुसार मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

उत्तर ३ : मन्त्र का प्रयोग निष्फल होने के अनेक कारण हो सकते हैं। प्रयोग-कर्ता के विरुद्ध उसकी 'ग्रह - दशा' भी सम्भव है। अथवा जितनी एकाग्रता और श्रद्धा के साथ प्रयोग करना चाहिए, उसका उसमें अभाव रहा हो। ऐसी दशा में निराश न होकर पुनः प्रयोग करना चाहिए या किसी अन्य प्रयोग को आजमाना चाहिए।

उत्तर ४ : परीक्षण में समय तो बर्बाद होता ही है। इसी से 'अनुभवी साधक' या 'गुरु' की सहायता की आवश्यकता पर बल दिया गया है। आजकल अहङ्कार - वश लोग गुरुओं की उपेक्षा कर या

पाखण्डी व्यवसायी गुरुओं के चक्कर में पड़कर मनमाने ढँग से प्रयोगादि करते/करवाते हैं। फलतः अभीष्ट सिद्धि नहीं होती और 'धन' तथा 'समय'—दोनों की बर्बादी होती है।

[३]

गाजियाबाद (उ. प्र.) के श्री चन्द्रगुप्त जायसवाल अपने पत्र दिनाङ्क १३-८-८३ में लिखते हैं—

(१) भाग ४ के पृष्ठ ४७ पर 'अभीष्ट देवताओं का आकर्षण' दिया है। मन्त्र में कुछ त्रुटि प्रतीत होती है। यथा—

ॐ हुं स्वाहा। ॐ वं स्वाहा। ॐ अमुक-देवतायै नमः।

ॐ ह्री क्रीं भैरवाय ॐ फट् स्वाहा॥

'क्रीं' के स्थान पर क्या 'क्लीं' होना चाहिए ?

(२) भाग ४ के पृष्ठ ५८—६ शत्रु को परास्त करने का शाबर मन्त्र। उक्त मन्त्र में शत्रु का नाम एवं उसकी माँ का नाम भी चाहिए। सामान्य रूप से शत्रु का नाम ही मिल पाता है। उसकी माँ का नाम नहीं। अतः माँ के नाम की जगह पता/निवास आदि का उल्लेख कर सकते हैं या नहीं ?

समाधान : जो भी 'शाबर मन्त्र' प्रकाशित किए जा रहे हैं, उनके प्रस्तुत-कर्त्ताओं के शुभ नाम भी पूरे पते के सहित संग्रह में दिए जा रहे हैं। यदि किसी मन्त्र में कोई शङ्का हो, तो उसके समाधान के लिए उचित यह है कि जिज्ञासु बन्धु, जवाबी कार्ड या आवश्यक टिकट के साथ उस मन्त्र के प्रस्तुत-कर्त्ता से सीधे पूछें।

पृष्ठ ४७ पर प्रकाशित मन्त्र गुजरात के श्री शाह (पता पृष्ठ ४०) से जिस रूप में मिला, उसी रूप में छापा गया है। अतः 'क्रीं' को ही मानना चाहिए। इसी प्रकार पृष्ठ ५६ पर प्रकाशित मन्त्र के प्रस्तुत - कर्त्ता श्री कादरी बापू का पूरा पता पृष्ठ ५६ पर दिया गया है। श्री जायसवाल को उन्हीं से अपनी जिज्ञासा का समाधान पूछना चाहिए।

कल्याणकारी शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. सिद्धगोपाल अवस्थी
के संग्रह से
सुपुत्र पं. राजेन्द्रकुमार अवस्थी
हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा प्रेषित

१—पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महा-यक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : (१) यथा-विधि पूजन आदि कर उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करे। फिर पति को वशीभूत करने के लिए वस्तुओं को इस मन्त्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित कर देवे।

(२) गोरोचन, कुंकुम व केले के रस को पीस कर उपर्युक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इसे मस्तक पर बिन्दी आदि के रूप में धारण करे, तो स्त्री अपने पति को वश में रखती है!

२—गर्भ रोकने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। ॐ बाबा अङ्गदे, बांधि राख। नृसिंह जती - जती, सीस ते बांधि राखि। श्री गोरखनाथ, कांख ते बांधि राखि। पूती का राजा, सूंडी ते बांधि राखि। हठासन देवी, यह मन पवन को रख। थवै गर्भ और बांधे घाव। थांभे माता पार्वती, गांडो बांधे ईश्वर जती। जब लग गांडो कटि पर रहै, तब लग गर्भ काया में रहे। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत को, गर्भ-वती स्त्री की एड़ी से चोटी तक सात बार नाप कर, सात लड़ का गण्डा बनाए। उपर्युक्त मन्त्र से उस लड़ में सात गांठ दे। फिर उसे गर्भवती स्त्री की कमर में बांधे। कमर में गण्डा बांधने से पूर्व गुग्गुल की धूप दे, फूल चढ़ाए, सवा पाव मिठाई का नैवेद्य लगाए और बच्चों को बांट दे। गण्डे को नौ मास पूरे हो जाने पर खोले।

३—सर्व-जन-मोहन मन्त्र

तेल सों मे तेल, राजा - परजा पावै मेल। कछुक पानी, मसक ब्यान। छः सौ बीर, मेरे पाय लगाव। हाथ खड्ग, फूलों की माला। जानि बिजानै, गोरख जानें। मेरी गति को कहै न कोय। हाथ पछानो, मुख धोऊँ। सुमिरो निरञ्जन देव, हनुमन्त यती। हमारी पति राखो। मोहिनी-दोहनी दोनों बहिन आव। मोहनी रावन चलै। मुख बोले, तो जिह्वा मोहूँ, आस मोहूँ, पास मोहूँ। सब संसार में निकलूं, टीका देय ललाट। आवे तो नाहि, पकड़ बाँध ले आवें, दुहाई अञ्जनी के पूत की। दुहाई गुरू गोरखनाथ की। दुहाई निरञ्जन भगवान् की। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : एक थाली में ११ दीपक जलाए। 'दीपावली' की रात में, भोज - पत्र पर सिन्दूर से इस मन्त्र को लिखे। फिर पञ्चोपचार-पूजन कर मन्त्र का १०८ बार जप करे। आवश्यकतानुसार साध्य व्यक्ति की ओर मुंह कर तीन बार इस मन्त्र को जपने से वह मोहित हो जाएगा।

४—अन्न-पूर्णा मन्त्र

ॐ नमः अन्नपूर्णा। अन्न पूरे, घृत पूरे, गणेश जो पाती। पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवतन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। श्री गुरू गोरखनाथ की दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले 'पञ्चाङ्ग' में 'सिद्ध-योग' देखे। उस योग में उक्त मन्त्र का एक लाख जप करे। इसके बाद आवश्यकता के समय भोज्य-सामग्री से सर्व-प्रथम माँ अन्नपूर्णा को नैवेद्य लगाए। ब्राह्मण-भोजन कराए। भोग के एक भाग को कुएँ में डाल कर एक हाथ से लोटा भर जल खींचकर लाए। भोग के शेष अंश को साथ रखकर 'दीपक' जलाए। पुनः माँ अन्नपूर्णा का तथा भगवान् वरुण का पूजन करे और उपर्युक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। ब्राह्मण-भोजन करा कर अन्य लोगों का भोज करे। 'भण्डार' में कमी नहीं होगी।

विष, नजर नाशक प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री विश्वनाथानन्दनाथ
भटमुरना, पो. कतरासगढ़, धनबाद (बिहार)

१—बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र

पर्वत नीचे सोहरी गाय, जेकरे गोबरी बिच्छू बिनाय। कौन बिच्छू कारी, कौन बिच्छू गोरी। बिच्छू सो नमे महा - देव, आठ गिरह नौ पोर। बिच्छू झाड़ो पोर - पोर, दुहाई ईश्वर - महादेव, गौरा - पार्वती नैना-जोगिनी कामरू-कामाख्या की।

विधि : उक्त मन्त्र को मन-ही-मन पढ़े और रोगी के उस अङ्ग में फूंक मारे, जहाँ बिच्छू का विष हो। ऐसा बार-बार करने से बिच्छू का विष दूर हो जायगा और रोता हुआ रोगी कुछ ही मिनटों में हंसने लगेगा। यह स्वयं - सिद्ध मन्त्र है। इसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, केवल विश्वास होना चाहिए।

२—पानी पिलाने का मन्त्र

काली साम सनी निर्मला, बसे समुद्र-तीर। पङ्ख पसारो, बिखिया हरो, अमर करो शरीर। काले कुत्ते और सियारे शङ्कर बिखिया खाया। इन पाँचों से कभी न मरे, कण्ठ पानी जाए। दुहाई ईश्वर-महादेव, गौरा-पार्वती, नैना-जोगिनी, कामरू-कामाख्या की।

विधि : किसी आदमी को बिच्छू या साँप ने काट लिया हो और उसका गला बन्द हो गया हो या दाँत लग गया हो, तो उक्त मन्त्र को नौ बार पढ़कर 'जल' को अभिमन्त्रित करे और इस 'जल' से रोगी के मुंह में छींटा मार कर उसे पिला दे। ऐसा करने से उसे होश आ जाएगा और विष का प्रभाव कम हो जाएगा।

३—डाइन या नजर झाड़ने का मन्त्र

उदना देवी, सुदना गेल। सुदना देवी कहाँ गेल? केकरे गेल? सवा सौ लाख बिखिया गुन, सिखे गेल। से गुन सिख के का कैले? भूत के पेट पान कतल कर दैले। मारू लाती, फाटे छाती और फाटे डाइन के छाती। डाइन के गुन हमसे खुले। हमसे न खुले, तो हमरे

गुरू से खुले। दुहाई ईश्वर - महादेव, गौरा - पार्वती, नैना - जोगिनी, कामरू-कामाख्या की।

विधि : किसी को नजर लग गई हो या किसी डाइन ने कुछ कर दिया हो, उस समय वह किसी को पहचानता नहीं है। उस समय उसकी हालत पागल-जैसी हो जाती है। ऐसे समय में उक्त मन्त्र को नौ बार हाथ में 'जल' लेकर पढ़े। फिर उस जल से छींटा मारे तथा रोगी को पिलाए। रोगी ठीक हो जाएगा। यह भी स्वयं - सिद्ध मन्त्र है। केवल माँ पर विश्वास की आवश्यकता है।

४—भूत झाड़ने या भगाने का मन्त्र

बेरी-बेरी महा-बेरी, बेरी अन्धकार। सारी धूरी पढ़ के मारू उठे आँधी सात। सरसों शोला राय, नव करू मसान धाय। कार बकरी, कार करेजा। भून के अतरी खाय करेजा। मैया धोया डइनी बाँधो। बप्पर पुता ओझा बाँधो। तू बाँधो छः महिना। मैया बाँधो नौ महिना। उडन्त बांधो, गडन्त बांधो। तिरपन सौ जोगिनी बाँधो। रूनूक झूनूक कर आय, मोर आँगन में खाय। दुहाई ईश्वर - महादेव, गौरा-पार्वती, नैना-जोगिनी, कामरू-कामाख्या की।

विधि : उक्त मन्त्र के द्वारा रोगी के शरीर से भूत-प्रेत की छाया को दूर किया जाता है। पहले एक शुद्ध पात्र में शुद्ध जल ले। फिर उस जल को उक्त मन्त्र नौ बार पढ़कर फूंक मारे। उस जल के छीटे रोगी के मुँह में मारे। भूत-प्रेत जो भी होगा, वह भाग जाएगा। बाद में इस शाबर मन्त्र को सफेद भोज-पत्र में, लाल स्याही या अष्ट-गन्ध से लिखे और ताँबे की ताबीज में भर कर रोगी के दाहिने हाथ में बाँधे।

५—उलटने का मन्त्र

ॐ उलटत नरसिंह, पलटत काया। एही ले नरसिह तोहे बुलाया। जो मोर नाम करत, सो मरत-परत। भैरो चक्कर में, उलटी वेद उसी को लागे। कार दुहाई, बड़े वीर नरसिंह की दुहाई। कामरू-कामाख्या देवी की दुहाई। अष्ट-भुजी देवी कालिका की दुहाई। शिव सत्-गुरू के वन्दे पायो।

विधि : उक्त मन्त्र के द्वारा आभिचारिक प्रयोगों का प्रभाव उलट दिया जाता है। कभी-कभी डाइन या ओझा, किसी का बुरा

करने के लिए कुछ 'प्रयोग' कर देते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उक्त मन्त्र का 'जप' किया जाए या धुमन से 'हवन' किया जाए, तो 'प्रयोग' करनेवाले को उसकी ही शक्ति उलट कर वार करेगी। अपनी ही शक्ति के द्वारा वह भोगेगा। यह 'श्री नरसिंह मन्त्र' है। अमावास्या की रात्रि में एक हजार बार 'हवन' करके इस मन्त्र को जगा लेना चाहिए। इस मन्त्र का जप सर्वदा नहीं करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर ही करना चाहिए।

६—जला घाव झाड़ने का मन्त्र

चार कोना फेर से उत्तम परम चरावे गैया, उठो नबी साहेब हांको गैया। आपन जली आग हो जाय पानी। दुहाई मुहम्मद रसूल अल्ला की।

विधि : किसी का शरीर आग से जल गया हो और शरीर में जलन होती हो, तो उक्त मन्त्र को बार-बार पढ़कर फूंक मारने से जलन समाप्त हो जाती है और घाव का बढ़ना रुक जाता है। इस मन्त्र से जलती हुई आग को बुझाया जा सकता है। शरीर जलने पर अगर जल्द ही इस मन्त्र से जले हुए स्थान को झाड़ा जाए, तो न सूजन होती है, न जलन, न फफोला। अगर किसी ने किसी को वाण मार दिया हो और जलन होती हो, तो भी इस मन्त्र के प्रभाव से वह आराम लाभ कर सकता है।

७—सांप का विष झाड़ने का मन्त्र

कहे खुदा, सुनो मुहम्मद। सांपिन का विष क्या, पुकार कहे नबी मुहम्मद, जहां रहे घर बैठा आदम, चाम लपेटीया मन माथे रखायो, हाक मारे विषू झड़ी, जो निर्मल करे खुदाय।

विधि : अगर किसी व्यक्ति को सांप ने काट लिया हो और उसके शरीर में विष का प्रभाव हो गया हो, तो इस मन्त्र के द्वारा काटे हुए स्थान से नीचे की ओर फूंक मार कर झारने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। जब तक विष का प्रभाव समाप्त न हो जाए, तब तक बार-बार फूंक मार कर झाड़ना चाहिए।

८—कुत्ता का विष झाड़ने का मन्त्र

अम अबरमू अमरन, फइन्ना मुबरे मून। (शेष पृष्ठ २२ पर)

वैद्य-राज लक्ष्मीकान्त धुटके के संग्रह से सर्प-विद्या

शबर-मन्त्र-सागर

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सन्तोषकुमार धुटके

महात्मानगर, नासिक (महा-राष्ट्र) से प्राप्त

मन्त्र-सिद्ध करने का उपाय

पहले मन्त्र को पक्का याद करे। फिर 'सूर्य-ग्रहण' या 'चन्द्र-ग्रहण' या 'नाग-पञ्चमी' के दिन नागों की सामान्य पूजा कर तेल या घी का दिया जलाकर, दिए के सम्मुख बैठकर मन्त्रों का 'जप' करे। 'जप' के बाद एक नारियल फोड़कर प्रसाद बांटे। इस प्रकार क्रिया करने से सभी मन्त्र सिद्ध होते हैं। बाद में आवश्यकता होने पर, जिस व्यक्ति या जानवर को सांप ने काटा हो, उसको मन्त्र से अभिमन्त्रित 'जल' पिलाए। 'जल' पिलाने की क्रिया ३-४ बार करे। सांप का विष उतर जाता है।

(पृष्ठ २१ का शेष)

विधि : किसी आदमी को पागल कुत्ते ने अगर काट लिया हो, तो इस मन्त्र से उसे झाड़ना चाहिए। बुधवार या शुक्रवार को झाड़ना चाहिए। सर्व-प्रथम रोगी को उक्त दिन बुला कर, पश्चिम-मुख बैठाना चाहिए। उसके बाद कांसे की थाली मंगाकर उक्त थाली को अच्छी तरह साफ करे। मन - ही - मन उक्त मन्त्र को पढ़कर, थाली में फूंक मारे। कम-से-कम २१ बार मन्त्र पढ़कर थाली में फूंक मारे। फिर रोगी की पीठ में थाली को रखे। रोगी के शरीर में कुत्ते का विष होगा, तो थाली उसकी पीठ से चिपक जाएगी। शरीर हिलाने पर भी वह नहीं गिरेगी। कुछ देर के बाद अगर थाली गिर जाए, तो फिर उसी तरह दुबारा करना चाहिए। जब तक शरीर में विष रहेगा, थाली पीठ को जोर से पकड़ती जाएगी। एक समय ऐसा आएगा, जब मन्त्र पढ़ने के बाद भी थाली नहीं पकड़ेगी। तब समझना चाहिए कि शरीर में विष नहीं है। अन्त में रोगी को स्नान करा कर किसी कुत्ते को गुड़ या मीठा खिलाना चाहिए।

१. ओम नमो आदेश गुरू को। काहे रे बिछु/साँप तेने काटा। सब गोंद गिरी मुँह। चार्व्यों में जल काटि के पिलाऊँ। कहे से उतरी जाय। उतारी उतारू चढ़े। तो मार के गरुड खहेंकारू। लङ्का - सी कोट, समुद्र-सी खाई, उतर रे विषराती। हनुमन्त की दुहाई ।।

२. ओम नमो आदेश गुरू को। घर - पटक घसनि - घसनि सार। ऊपरे, घसनि विष नीचे जाय। काहे विष तू इतना रिसाय। क्रोध तो तोर हो पानी। हमरे थप्पड़ तोर नहि ठँकान। आज्ञा देवी मनसा माई। आज्ञा विष-हरि, राई दुहाई ।।

३. ओम नमो आदेश गुरू को। अँगोछा-अँगोछा तोरे बलिहारी जाई। अंगोछा मन्त्र मार से विष झर-झर जाई। सोने का अँगोछा, रूपे की झालरी, होय निर्विष तोरे मारे रोगी का गात री। लो विष झार. फेकहुँ सात समुद्र पार। आदेश माई मनसा की। दुहाई, नहीं तो विष-हरि-राई की आन लागे ।।

४. ओम नमो आदेश गुरू को। इकडी-मकडी-खिडकी जँगला-दुआर, राम रहिम को इसमें कुछ नहि विचार। जय माँ देवी चामुण्डे, करूं तेरा भरोसा। कारण हुल उर वारण देहु वर ऐसा, आए और डण्डा धरि के घुमाय। कौन - कौन सर्प सेवा करूं समुझाय। जिसने सब साँप, खाडिस करैला औ गुखुरा और केलरिया। बारह मास बसै जल पोखरा। जल में जल कितना खाय, सो कछू बूझि नहि जाय। एक चोट देखि से झाड़े चुपचाप। विष के ज्वाला से जीव थर - थर काँपै। चोट देखि के ओझा नहि झारै। का करै सो सोचि के मन मारै। इसी समय वैद्य धन्वन्तरी आय, तब उसने ओझा सो कही समुझाय। सुनु ओझा अभी मोर बचन धर ध्यान। चौसला के मन्त्र से करूं विष उत्पाटन, शङ्ख जल में और मानिक जल में। जल में काल-कूट विष जल में। माता के तीन शिष्य--- ईश, मछौना-आलिया, साई। माता के स्मरण से विष उरवारण जाई। इसके अङ्क में अब तानि को विष नाई। राई विष - हरि देवी मनसा माई की दुहाई ।।

५. ओ नमो आदेश मातु विष-हरिया का। धुलिया-धुलिया तुम उडि के फिराव। हमको देख तुम सम्मुख में ठहराव। मनसा के वर

विष जाय न ऊपर में। विष-हरि के शपथ कहुं यह पाठ में। झट से विष धाव मुंह चलि आय। दुहाई देवी मनसा लाय ॥

६. केला अफला गाछ खाली झर-झर झुराय। देवी को ज्योति से विष उड़क मुँहे दिखराय। तू कहाँ रे विष, माय मनसा की दुहाई। गरुडाला हम कहौ जो गाई कि कम्पन से करे विष शीघ्र नीचूं आय। शिव भोला बुलावें औ मनसा माय। आदेश विष-हरि राई ॥

७. ओम नमो आदेश गुरू को। गुदरी धोबिनियाँ कपड़ा फीचै। केवडा लल्ला घाट में, पदम् पात में विष उपलाय। आँऊँ उसके पाट में। धोबिन तुम गुरू, हम तोहार चेला। अमुक अङ्ग के विष बांधूँ तेरी आंचला। आओ रे बिषि हमारे कपड़े में आय। बांधूं विष, बांधते घटि जाय। आदेश देबी मनसा माई, दुहाई विष-हरि राई ॥

८. ओम नमो मनसा देबी का आदेश। धोबियानियाँ पाट पर, गुदरिया जो धोय रहि। फरइनि के पात में सर्प-विष उपलाय रहि। हे गुदरी ! तुम गुरू मेरी, हम तुम्हारी चेला। अमुक अङ्ग के काली विष बाँधु, तेरा आंचला। विष-विष, अरे विष खपरा, विष गोखुरा, हम गुदरिया में छिपाय रखू तोहरा। गरुड़ तुम जे रहिन ऊंचे पहार, तनिक ताको ऊपर से नीचे एक बार। आवो रे विष तोरे बाँधु मनसा के वरदान। दूई मास रह तु गुदरियों में लुकान। आदेश हाडी दासी चण्डी की दोहाई ॥

९. ओम नमो आदेश गुरू का। कोने में बैठे लखीन्दर, बिहुला बैठी घर में। दोनों मिलि चरखा काते, हात-पाँव के घर में। बिहुला बोलत विष-हर, तोही पहिचान, मोर स्वामी को। डंस लिए थे प्राण, अभी तोही करूँ नमस्कार बारम्बार। तू हमरे घर भूल न आना। इस बार, जावो विष बेगी झट से जाव। नहि तो, माय मनसा के माथा खाव।

१०. ओम नमो आदेश गुरू का। अरे विष तोरे कोरिया रङ्गनि रेख रहेयो, जेहि पीवत महादेव के नील-कण्ठ भयो। जावो रे बिष, मनसा देवी दूध झारी लियो। शीघ्र जाओ विष, देवी के गुहार भयो। आज्ञा देवी मनसा माई। आज्ञा विष-हरि राई की दुहाई फिरै ॥

११. ओम नमो आदेश गुरू का। नदिया से आय रहि विष लहरों के सङ्ग में। सो गरुड़ विलोकत ही पान करै। लहू रङ्ग में, जाओ

वेगी विष, लगावो मति देरी। आए देवी मनसा, लिए दूध के झारी। नहि विष अमुक के अङ्ग तनिको नाही। फूंक चोट से मनसा के दोनों हाथ उड़ाही। आदेश देवी मनसा, विष-हरि राई की दुहाई ॥

१२. ओम नमो आदेश मनसा देवी की। फुड़िया मारे छः हथिया, कोने उठले बदरिया। वहि पवन में उड़ी जाय, विष तोरी सब गद-रिया। स्थिर होओ विष घाव मुंह के पार में। नहि विष-नहि विष अमुक के शरीर में। विष-हरि राई की दुहाई फिरै ॥

१३. ओम नमो आदेश गुरू का। सुग्रीव के बदन से विष उड़ि के पराय। बुढ़िया मांसी हाँट वोटन को जाय। मुंह में लिए और लिए अंचल पसार। उनकी कृपा, सब विष जल होय छार। अमुक अङ्ग नहीं विष नहीं भार। देवी विष-हरि ने दिया विष टार ॥

१४. ओम नमो आदेश गुरू का। उत्तर दिश काली बदरिया, तेही बीच ठाढ़ काल मदरिया। एक हाथ चक्र धारे, एक हाथ गदा सँभारे। कक्र के मारे, सात खण्ड हो जाई। गदा के मारे, सात पाताल चल जाई। ओम हर-हर वेग जाय, विष महेश के आदेश ॥

१५. राम-तुलसी, कृष्ण-तुलसी, बबुल-तुलसी पत्ता, नाही जाने सब कोई साँपा लता। यदि गिरे रस पिब रोगी के गात, सर्प - विष तुरन्त ही भागी जात। क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं, रां रां, ठः ठः, नहीं विष अमुक अङ्ग, अब नाहीं। माय मनसा देवी के दुहाई। आज्ञा विष-हर राई की दुहाई ॥

विधि : तुलसी एक वनस्पति है। उसकी पत्ती को उपर्युक्त मन्त्र पढ़कर दंश-स्थान पर चिपका दे। जब विष शरीर से उतर जाएगा, तो पत्ती शरीर से अलग हो जाएगी, थोड़ी-सी पत्ती का रस निकाल कर ५ बार मन्त्र पढ़कर विष-ग्रस्त को पिलाए। इससे साँप का जहर उतर जाता है।

१६. ओम गङ्गा गौरी, दोऊ रानी। ठोकर मार, करो विष पानी। गङ्गा पीसे, गौरी खाय। अठराह विष, निर्विष हो जाय। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

१७. ओम सार झखार, कालं कोठा बारवाल पलाता। यह-यह, छः उजरा छः करी, छः करी, छः पीरी। अठराह जाति जाग-ज शब्द सांचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

विधि : उक्त मन्त्र पढ़कर लाल मिर्ची के पाउडर को अभि-मन्त्रित करे। विष-ग्रस्त को खिलाए, तो विष उतरता है।

कृष्ण-सर्प-सार मन्त्र

१८. चँवर सम घूँघट केश, सिर कृष्ण के छाय, हँसते-खेलते मोहन, तीर काली-दह के जाय। वहाँ रहा कदम्ब तरु एक सुन्दर। नाना भाँति के चारि कदम्ब, तरुवर तहाँ राखि मुरलिया मोहन मुरारी। काली-दह केलि करण गए बिहारी। सोवत रहेऊ भयङ्कर नागा। पाई आँखेद तुरन्त वह जागा। तुरन्त सम्मुख आए के घाय रिष आय, बिहँसि कृष्ण तब नाग-सिर चढ़ि जाय। जब प्रभु-चरण नाग सिर लागै, झरण लागै विष झट भागे। नहीं विष अमुक अङ्ग अब नाही। आदेश मनसा, विष-हारी राई की दुहाई॥

१९. काली-दह के तीर पे कृष्ण जी पहुँचे आय। बाँसुरी राखि के कूदि पड़े जल में जाय। कलिया नाग बसै वह जल में मँझार। श्री-कृष्ण को देखि धाए छोड़ फुफूकार। यह देख कृष्ण-चन्द्र ने तुरन्त बन्ध कर दीन्ह। पशु-पक्षी अरु जीव सङ्कट हरि दीन्ह। श्रीकृष्ण के स्मरण ते अमुक अङ्ग विष झर जाई। आदेश विष-हर राई की दुहाई॥

सर्प-विष नाशक मानस-सार मन्त्र

२०. मातु मानस तेरे मन्त्र का करौं प्रचार। विष-नाशन मों देवी रहै तेरा अधिकार॥ किसको शक्ती-बल है, कौन सके छुड़ाय? विष के हाय के, कौन सके छुड़ाय? जब लौं पूजा तेरी जो करे मन लाय। तो तिनके तेज से, उसका विष झर जाय॥ तब तुम कृपा करो जान अति दीन। सर्प-दशन-विष फूंक से हो जाय क्षीन॥ निशि घोर रहें चढ़ें अन्धेरी हाय। कौन सर्प ने डंसा, ना जान हम सोय॥ बीछी-मकरी आदि अरु अष्ट-रङ्ग नाग। ना जानी कौन जाने यह रोगी सो लाग॥ यदि होय सो रहो चित्त, विष-धर विषाऊ। तबहुँ न होय स्थिति, कोई जोर कोई ठाऊ। आदेश माया मनसा देवी की। अमुक अङ्ग विष निर्विष हो जाय॥

२१. मेघ लाला आदि करे काल कूलीम मे जितनी। सूत्ता के सञ्चार से उसकी लाल गिरे उतनी॥ के उटिया के कमरख भाई। तोहरे रहरे हमना जाई। काला कचूर काल कूटिया विष। काहे तू

करती इतनी रिष। जा विष धाव मुख के पीर। जब तक रहे शक्ती बल केर। आदेश देवी मनसा माई की। तृतीया मनसा माई की॥

२२. ओम नमो आदेश मनसा देवी को। ऋषि बोले छुई नितोरे हम कांटो। कालयार काला कुटों विष कोरे देय भाठी। मनसा मन्त्र फूंक करू तोरे पानी। देखूं इस बार तेरी होय कौन ठेकानी। मनसा मन्त्र के जोर से, विष जल होय। गरुड के स्मरण विष नाहीं रहाय॥

सर्प-जल शनि-दर्पण मन्त्र

२३. द्वितीय मंथन से समुद्र विष उपलाय। सो देखि देव-दैत्य उर सोच अकुलाय। देव-गण बोले शिव सो, होय कवन उपाय। अब कैसे बचूं, तुम सब बोलो जुड़िआय॥ इतना बचन सुनि बोले देव महेश्वर। कहे अधिर होय अब हरि रक्षा कर॥ हुए उपस्थित हरि स्मरण के करते ही। देखि शिव सन अस मधूरी बानी कही। अपने कण्ठ में धरो यह सब विष। तब तो होय समुद्र-जल निर्विष॥ हरि-वचन सुन शिव कियो विष-पान। उदरस्थ नाहीं कियो, दियो कण्ठ-स्थान। तब ते उनका नाम नील - कण्ठ कहाय। हरि - हरी बोल विष जलमों दरसाय।

विधि : एक मटके में पानी भरकर उसमें ३ गवत (घास) के पत्ते डाले और नीचे के भाग में एक त्रिशूल बनाए। मन्त्र पढ़े और जिसको सांप ने काटा हो, उसको उस पानी में देखने के लिए कहे। ऐसा करने से कुछ ही क्षणों में विष उतर जाता है।

२४. जेहि समए गए, राम बन माही। तिनका तहां कष्ट अति होहीं॥ सिय-हरण अरु बाली-नाशा। पुनि सागी लषन नाग फांसा। विकल हरि देखि नाग फांसा। स्मरण करहि गरुड निज दासा॥ विनती नन्दन बसही पहारा। पहुँचे स्मरण ते ही लङ्का जल सारा। लषन बांधि जितने सब नागा रहे सो। गरुड देखि तुरन्त सब भागा। अमुक अङ्ग विष, निर्विष होए जाई। आदेश श्रीरामचन्द्र की दुहाई। आज्ञा विमतानन्द की आन॥

२५. कंस कुलारये तक्षक को निज गृह सान। काल - कचूर विष मांगते, सो तक्षक किए प्रदान॥ दधि के भीतर राखि यतन कराई। मस्तक धरि एक दूत पठवाई। दूत चले गोकुलपुर नियराए। राति समय राधा-गृह चलि आए। श्रीकृष्ण जन्म राधा दधि लै राखि फेंकी

मट्की। निज मट्की दधिमहें राखि। सरल राधा प्रपञ्च कछु नहीं जानी। निज मट्की दधि कृष्ण पह आनि। मगन मन कृष्ण करै दधि आहारा, खातहीं गिरे अचेत धरणी-धारा। सब गोपिनी चकित चित्त होई। राधा - हृदय दारुण दुःख होई। राधा बोली, ललिता यह का भयहु ? प्रिय मोहन केहि भाँति गिरेऊ ? ललिता कृष्ण - मुख लाल जो देखी, राधा सन कहाई उर दुःख विशेषी। काह करि तू राधा, दधि कहँ पाई ? जानि तू विष कचूर खिलाई।

२६. ओम नन्द-यशोदा सुनै जब, लागै कलङ्क प्रीत नशाय। जब आया न सुने सब, होव दुर्गति दुःखदाय। अब बोलहु राधा करौ कवन पाई। कृष्णचन्द्र प्रिय जस जीवन पाई। ललिता वचन राधा चिन्तित भयऊ। कवन करौं उपाय कह रोवन लागेऊ। करे बिलाप कहि प्राण अधारा। लोटहि धरणि न देह सँभारा। ईश्वर - कृपा कछु बूझि न जाई। क्रन्दन वाक्य मन्त्र अस होई। उठि बैठेउ कृष्ण हर्षाई। गोपियन सान्त्वना दै समझाई। प्रेमानन्द उमँगि उर लावही। गोपी-यन पुलकि कहती विष नाही। आदेश सरल षोडशी गोपीयन की, आज्ञा विष-हरी राई की दुहाई ॥

विष-नाशक अग्नि झाड़ने का मन्त्र

२७. आल विष, काल विष। मारवाहां चौसठि योगिनी बले ए विषया। ब्रह्माबले मलो विष आगुणे पूडे। तेजेर चौढे गगन फाटै विष गेल उडे। ऊसो विष पूसो विष, येरवोन या छिल अमुकेर (नाम) अङ्गेर विषेर सङ्गे सब पूड़े गलो। आलनागिनी, काल-नागिनी चौंसठ योगिनी। दाना दैत्य, सब सङ्गे। मनसा सतीनी मलो, विष मलो पूडे। नाहि विष, विष-हरीर आज्ञा। दुह्राई मनसार, दुहाई गुरु देव-सिद्धि रामेर। दोहाई, नहि विष —विष नाहि आर ॥

विधि : यह झाड़ा उस समय दिया जाता है, जब और किसी प्रकार से रोगी का विष दूर करने का उपाय नहीं रहता। जब रोगी बेहोश हो जाता है, मुँह से बोला नहीं जाता, उस समय रोगी को केले अथवा कमल के पत्ते पर शयन कराए, सब शरीर पर तेल चुपड़ दे और धीरे-धीरे अग्नि से सेंके। ऐसी विधि से सेंके कि रोगी के अङ्ग में 'ताप' होने लगे। यह क्रिया केवल अन्त समय ही की जाती है।

२८. पहिला बन्ध गणपती, दूसरा बन्ध सितापती, तिसरा बन्ध त्रिभुवनपती, चौथा बन्ध चोसष्ट जोगिनी, पाँचवाँ बन्ध पाँचो पण्डव, सहावा बन्ध सहा दर्शनेस, सातवा बन्ध सती आसरा, आठवा बन्ध अष्ट भैरव, नवना बन्ध नव-कुण्ड नागाऊ। उतर-उतर नागोबा तुला वासुकीची व्दाही, आस्तीकीची व्दाही, आखु मिखू, विधारी बादशहा। गुरू का मन्त्र, चले साचा छू ॥

२९. एक-मुखी रुद्रानी गणपती उतरी, दोन-मुखी रुद्रानी सितापती उतरी, तीन - मुखी रुद्रानी त्रिभुवन उतरी, चार - मुखी रुद्रानी चौसष्ट जोगिनी उतरी, पाँच - मुखी रुद्रानी पाँची पाण्डव उतरी, सहा-मुखी रुद्रानी सहा दर्शनेस उतरी, सात - मुखी रुद्रानी साती आसरा उतरी, आठ-मुखी रुद्रानी अष्ट-भैरव उतरी, नऊ-मुखी रुद्रानी नऊनाथ उतरी, दहा-मुखी रुद्रानी ज्याला चावला त्याचा सर उतरी, तुला वासुकीची व्दाही, आस्तीकाची व्दाही, आखू - मिखू, विधारी विधारी बादशहा। गुरू गोरखनाथ का मन्त्र साचा छू ॥

३०. रेवली गुरू वस्ताद बड़े। पान उतारने लगे, देखा गुरू। रोखा गुरू, वाट दिखाय सो परम गुरू। सिद्धि फूरे, श्री महादेव की सिद्धि फूरे ॥

३१. कौल-खण्ड, गौल-खण्ड, दोनों मिलि के चले गवरा रानी के घर। गवरा रानी पुछन लगी, कहाँ आयो बाबा धनात्री, आयो बाबा धनात्री। ज्या उतार, नखी बाहु, अमृत बाहु, अमृत बाहु, मु मे विख का निरविख करना, निरविख करना, निरविख करना। तेरी सिद्ध, सैदहन मन्त्र तेरी सिद्ध, देव-गुरू तेरी सिद्ध ॥

३२. बाप रे तहकीका, चौवदा विद्याचे मुल, मुल गेले पाताल, फांधा गेल्या आगासा बाप-बाप करता, पावला धनात्री, आयो बाबा धनात्री, ज्या उतर नखी बाहु, अमृत बाहु, अमृत बाहु, मु मे विख का निरविख करना, निरविख करना, निरविख करना। तेरी सिद्ध, सैदहन मन्त्र तेरी सिद्ध, देव-गुरू तेरी सिद्ध ॥

३३. छोटी - मोटी सिलोटी, विख दे ब्रह्मा की बेटी। आपन बाटे, आपन खावे। ठाव न ईख, निरविख। सीव नासो, विख नासो ॥

३४. करक घन म्हणजे, पाटन काल, म्हणजे राजा सुसी, कुसी, तूरकी, फूरकी, औट कोट, नागासो, ओ भाग भई थी। कया हो भाग, समाल डङ्ख, जागघर करपाल भाट मरे ।।

३५. धारा नगरी, ब्रह्म भावे। ऐसी चरन गई, देवी देखन आई। हे विख ते विख मार, निधी रानी, सप्त - पाताल, नाहीं विख, तो बाला हनवन्ते, अनारधार। इखाचा निरविख करी की। सर्व विख नाश करी ।।

३६. गुञ्जे तल्लाख, कन्हेर, बिरख। तेरी माँ पावन लागी। पाबते, पावशेर, मोत नकी। जाली देख तुला, विलट जाय। सिब नासो, विख नासो ।।

३७. ओम नमो आदेश गुरू कू। पञ्जान पानी, स्थावर जङ्गम। ललार विष, डठ विष, कूट विष, अफू विष, धतूर विष, कुकुरदाढ विष, अठरा-लक्ष-योनिका-विष मेरे दृष्टि आगे रहे, तो गोरखनाथ की आन ।।

३८. आंवढया नागा। महा-प्रचण्डा, चवदन्त। तेरी मां पुछन लगी, कौन तेरा घर, कौन तेरा स्थल। लालण्डी वेग बोल, मन की रीत, तेरे मुख से पढ़े। कावर देश की माता देवी सत्त फूरे ।।

३९. सनसर मुंगुस, ईख तोड ते जाले। लालण्डी, बेग बोल। गन की रीत तेरे मुख से पढ़े। कावर देश की माता देवी सत्त फूरे ।।

४०. नव रख - रख। तेरे माथे मारू तिन टक्कर, लालण्डी, बेग बोल ।।

४१. गन लठे मन-देवता, लालमुण्डी बेग बोल, गन की रीत, तेरे मुख से पढ़े। कावर देश की माता देवी सत्त फूरे ।।

४२. काली विलीया, कपिला गाय, तु कौन - कौन मुंगुस काट-काट खाय, फाड-फाड, तोड-तोड, जाय नास्तर, उतर - नास्तर, तुझे कावर कामाक्षी देवी की आग्या। सीत पास, मेरे देवी की आग्या छू ।।

४३. आरे डङ्ख वेग बोल, वेग तमाशा देख। जो बोल, बोल नास्तर, गोदउनाथ गोसावी की आग्या, सीत पास, मेरे देवी की आग्या छू ।। देवदत्त अवधूत निरञ्जन ।।

४४. देवदत्त-देवदत्त कहां से आया ? आनन्द-भैरव ने सिङ्गी नाद बजाया । सिङ्गी का नाद, गुरू का सबद । नव-नाग, अहर लण्डी, तु ज्या सप्त-पाताल । अरे डङ्खु, वेग बोल, वेग तमाशा देख ।।

४५. आगास सांग मूल । पाताल सांग लहर्या, सांग पाहाज्या । अरे डङ्खु, वेग बोल, तमाशा देख छू ।।

४६. जो बोल, बोल नास्तर, नवनन्द की आग्या । सोलाह सिद्धि की आग्या । लखंजती की आग्या । ईश्वर-पार्वती की आग्या । सीत-पाट मेरे गुरू की आग्या छू ।।

विधि : क्रमाङ्क ३८ से ४६ तक के मन्त्रों का विधान यह है कि जब सभी उपाय करने के बाद भी सांप का विष नहीं उतरता, तब काटनेवाले सांप को मनुष्य की वाणी में बात कराने के लिए इन मन्त्रों का 'प्रयोग' किया जाता है । जब मन्त्र के प्रभाव से सांप मनुष्य की वाणी में बात करने लगता है, तब उस व्यक्ति को सांप ने क्यों काटा, ज्ञात होता है । ज्ञात हुए विवरण के अनुसार सांप की आत्मा को शान्ति देने का प्रस्ताव रखे । इससे सांप का विष उतर जाता है । उपर्युक्त मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित जल सांप द्वारा काटे हुए व्यक्ति को पिलाने या उसके ऊपर छींटा मारने से सांप मनुष्य की भाषा में बात करने लगता है । इससे उसका रहस्य जान-कर उसके प्रभाव को दूर करे ।

४७. चन्द्र - सूर्य अनार धार, मोको देखे । माथा धाले खराल । हाहाकारे जीभ लवे खांदे, ईश्वर की मुण्ड पडे, छू ।।

४८. चांद सोड चांदनी, सूर्या सोडी आपले तेज । ब्रह्मा सांडी, चारो वेद । नाग नाशन सांडी आपली भाक । शेक समाल, आपनी भाक, छू ।।

४९. गङ्गा-यमुना की लावूं बालू । सर्पा खिबू, तुझी टालू । तेरे मां-बाप की खिबू टालू । आतां घाट खिलू, जाती वाट खिलू, ना खिलू, तो मेरी आन, मेरे गुरू की आन, चांद-सूरज धनात्री की आन, यहां से जावे, तो श्री महा-देव अस्तीक की आन, छू ।।

विधि : उक्त मन्त्र का प्रयोग उस समय किया जाता है, जब सभी प्रयत्न करने के बाद न तो विष उतरता है, न ही 'सर्प' बात

करता है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल को सांप काटे हुए व्यक्ति के सिर पर छिड़के। जल छिड़कने से विष-ग्रस्त व्यक्ति को क्रोध आता है, वह बात करने लगता है।

साँप को भगाने का मन्त्र

५०. आछे कान, लम्बा पुछ। इस सिमे में आवे, तो गुरू गोरखनाथ की आन ॥

५१. खची टेकडी, विख भरे। खरक करे उलहाल। ओचडी देख रे भाई, तलाव-लहर, भजन तर जाय। देख रे भगवन्ता। पोहोच रे हनुमन्त ! कावर कामठे की विद्या फूरे ॥

५२. आदम चण्डबल। ठेसिरी, विख खराले। खद - खद लो खखले। विख सिङ्गवरा लयावे। उलका वेत करे, सो मेरे उपर विख भरे। ये लंलान उतरे, सत्तर खुदा को व्दाही, छू ॥

५३. अनसुट वेट, लिम्बन कर। गङ्गा-गङ्गा अनन्त-सवन्त। सुकी सिलोरी, मेरी बहनोरी। अन्त कितासी मासी नव-मास घर। झुनझून बतारे काला डङ्क, नाथी नाथ, नाथी डङ्क उठन्त पठन्त वारयेर भई। सँभाल डङ्क, जागसत जागधर, करपाल भाट-मरे, छू ॥

५४. सेखराया, कन फनरेत। काल के दोंद अथक वायेक। उठत-पढत, वार वरे भई। संभाल डङ्क, जाग सन्त। जाग धर, करपाल भाट मरे, छू ॥

विधि : एक कपड़े का लम्बा टुकड़ा या अपने सिर पर बंधा कपड़ा खोलकर उसे उद की धूनी देकर उक्त मन्त्र पढ़े और दोनों हाथ से कपड़े को फाड़े। कपड़े को फाड़ने से सांप के टुकड़े होते हैं।

५५. सूर्या उगवत, अडमडे, नगदेसो अवतार। नाना परीचे चार करत, सालु चितर विखन्द, दुमीद, देवदत्त, अवधूत निरञ्जन, छू ॥

सांप का डङ्क पलटाने का मन्त्र

५६. अलटन-पलटन, पठम काया। किने बेटी जोडने, इस पान कु किया। जिसकी विद्या, उस पर गया, छू ॥

५७. ओम नमो आदेश गुरू। चल-चल बन्द, हनुमान के पास। विख उतार, वासुकी आन। मेरी शपथ, गुरू की आज्ञा, छू ।।

विधि : जब साँप का विष पूरी तरह उतर जाता है, तब व्यक्ति को भविष्य में साँप का भय न हो, इसके लिए यह बन्धन-मन्त्र का 'प्रयोग' किया जाता है। इस 'प्रयोग' से व्यक्ति भविष्य में सुरक्षित रहता है और साँप उसे कभी नहीं काटता।

५८. अड्डु बन्द बांधु। धूर बन्द बांधु। हनुमन्त बांधु। जोगी दत्त, आम्ही बांधु। धूर बन्द ।।

५९. वार-वार झुंझुकार। वार बन्दी, हाड बांधु। हाड बन्दी, च्याम बांधु। च्याम बन्दी, गुद बांधु। असक बांधु, पसक बांधु, दात का वीख बांधु, मुख का विख बांधु, जिभ का विख बांधु, ठाई-ठाई का विख बांधु, रोम-रोम का विख बांधु, नव-नाड़ी बहात्तर कोठडी का विख बांधु। तिनसे साठ बरस का विख बांधु। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो अस्तीक माथा फूटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो घनात्री - विद्या पलटे। मेरा बांधा बन्ध छुटे, तो चांद - सूरज की काया पालटे, मेरा बांधा बन्ध छुटे, तो महादेव की पिण्डी फूटे। मेरा बांधा बन्ध छुटे, तो गरुड़ की जड लुटे। मेरा बांधा बन्ध छुटे, तो समुन्दर का पानी आटे। मेरा बांधा बन्ध छुटे, तो पाताल वासुकी का माथा फूटे। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, ईश्वर-पार्वती की आन, चांद-सूरज की आन, घनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। यहाँ से जावे, तो श्री-महादेव आस्तीक की आन, छू ।।

६०. तिन घड़ी का बन्ध बांधु। तिन त्रि - भुवन का बन्ध बांधु। तिन से साठ बरस का बन्ध बांधु। मेरी आन, मेरे गुरु की आन, ईश्वर-पार्वती की आन, चांद-सूरज घनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। यहां से जावे, तो श्री महादेव अस्तीक की आन ।।

६१. तिन घड़ी का बन्ध बांधु। तिन दिन का बन्ध बांधु। तिन महिने का बन्ध बांधु। तिन बरस का बन्ध बांधु। पांच घडी का बन्ध बांधु। पांच दिन का बन्ध बांधु। पांच महीने का बन्ध बांधु। पांच बरस का बन्ध बांधु। सात घड़ी का बन्ध बांधु। सात दिन का बन्ध बांधु। सात महिने का बन्ध बांधु। सात बरस का बन्ध बांधु। नव

घडी का बन्ध बांधु। नव दिन का बन्ध बांधु। नव महिने का बन्ध बांधु। नव बरस का बन्ध बांधु। ग्यारह घडी का बन्ध बांधु। ग्यारह दिन का बन्ध बांधु। ग्यारह महिने का बन्ध बांधु। ग्यारह बरस का बन्ध बांधु। तेरा घडी का बन्ध बांधु। तेरा दिन का बन्ध बांधु। तेरा महिने का बन्ध बांधु। तेरा बरस का वन्ध बांधु। पंधरा घडी का बन्ध बांधु। पंधरा दिन का बन्ध बांधु। पंधरा महिने का बन्ध बांधु। पंधरा बरस का बन्ध बांधु। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो अस्तीक का माथा फूटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो धनात्री - विद्या पलटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो चांद-सुरज की काया पलटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो महादेव की पिण्डी फूटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो गरुड को जड़ तूटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो समुन्दर का पानी आटे। मेरा बांधा बन्ध छूटे, तो पाताल-वासुकी की माथा फूटे। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, ईश्वर-पार्वती की आन, चांद - सूरज की आन, धनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। यहां से जावे, तो श्री महादेव अस्तीक की आन, छू ।।

६२. बन्द - बन्द, कुडी बन्द। श्री महा - देव सिंहासन चढ़े। चौप्पांशी लक्ष गोडे गणी। वासुकी घडानी ये बन्द किने दिया, मेरे गुरू ने दिया। चल-चल बुलाऊ। यहां से जावे, तो च्याहाउ चुगल। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, ईश्वर-पार्वती की आन, चांद-सूरज की आन, धनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। यहां से जावे, तो श्री महादेव अस्तीक की आन, छू।।

६३. सार-सिङ्गी रुद्र-भाल। हले-चले, गुरू की आन। आगे चले, आगे खिलू। पिछे चले, पिछे खिलू। आकाश खिलू, पाताल खिलू। मुख खिलू, दांत खिलू। जिभ खिलू, ठाई-ठाई खिलू। रोम-रोम खिलू। सासया घुरीजं जंकारी पुरजे-पुरजे माया मारा। हा सर्प आंत काला, गोरा सर्प ढांकना। ब्रह्मा दिजे पीठ, ये सरप मैंने खिला, ब्रह्मा होके जान। धनात्री विर की आन। पाताल-वासुकी की आन। यहां से जावे, तो श्री महा-देव अस्तीक की आन।।

६४. काबर देश की चेली कङ्कन, विलट टङ्क, गुकल कडी, विख बांधु। दुखल कडी, तिलवल कडी, विख बांधु। चार चवकडी, पांच

पाचों-कडी, छे छोकडी, सात-सात, आठ-आठ, हाड-हाड, फोड-फोड, गुद-गुद बन्द बांधु। अवरट-अवरट बन्द बांधु। तिनसे साठ बरस का बन्द बांधु। स्वेत बन्द, नाग की पूजा, पुजुडावे पगट रे, तो धन्तरी तेरे ऊपर विख भरे। बन्द बांधु, गुरू की आन। छुटत बन्द, गुरू अस्तीक की आन, छू ॥

जब बांधेवाला बन्ध छोड़ना आवश्यक हो जाता है, तब निम्न मन्त्रों का 'प्रयोग' कर बांधा बन्ध छोड़ दिया जाता है। मन्त्र इस प्रकार हैं—

६५. बार-बार झुंझुंकार। बार-बन्दी, हाड छोड़ू। हाड बन्दी, च्याम छोड़ू। च्याम बन्दी, गुद छोड़ू, असक छोड़ू, पसक छोड़ू, दांत का विख छोड़ू, मुख का विख छोड़ू, जिभ का विख छोड़ू, ठाई - ठाई का विख छोड़ू, रोम-रोम का विख छोड़ू, नव नाडी बहत्तर कोठडी का विख छोड़ू, तिनसे साठ बरस का विख छोड़ू।

मेरा बांधा बन्द ना छूटे, तो अस्तीक माथा फूटे। मेरा बांधा बन्द ना छूटे, तो धनात्री विद्या पालटे। मेरा बांधा बन्द ना छूटे, तो चांद-सूरज की काया पालटे। मेरा बांधा बन्द छुटे ना, छुटे तो महा-देव की पिण्डी फूटे। मेरा बांधा बन्द ना छूटे, तो गरुड की जट तुटे। मेरा बांधा बन्द ना छुटे, तो समुन्दर का पानी आटे। मेरा बांधा बन्द ना छूटे, तो पाताल-वासुकी की माया फूटे। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, ईश्वर - पार्वती की आन, चांद - सूरज की आन, धनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। यहां रहे, तो श्री महा - देव अस्तीक की आन, छू ॥

६६. तिन घड़ी का बन्द छोड़ू। तिन दिन का बन्द छोड़ू। तिन माहिने का बन्द छोड़ू। तिन बरस का बन्द छोड़ू। पांच घडी का बन्द छोड़ू। पांच दिन का बन्द छोड़ू। पांच महिने का बन्द छोड़ू। पांच बरस का बन्द छोड़ू। सात घडी का बन्द छोड़ू। सात दिन का बन्द छोड़ू। सात महिने का बन्द छोड़ू। सात बरस का बन्द छोड़ू। नव घडी का बन्द छोड़ू। नव दिन का बन्द छोड़ू। नव महिने का बन्द छोड़ू। नव बरस का बन्द छोड़ू। ग्यारा घड़ी का बन्द छोड़ू। ग्यारा दिन का बन्द छोड़ू। ग्यारा महिने का बन्द छोड़ू। ग्यारा बरस का

बन्द छोड़ू। तेरा घड़ी का बन्द छोड़ू। तेरा दिन का बन्द छोड़ू। तेरा महिने का बन्द छोड़ू। तेरा बरस का बन्द छोड़ू। पंधरा घड़ी का बन्द छोड़ू। पंधरा दिन का बन्द छोड़ू। पंधरा महिने का बन्द छोड़ू। पंधरा बरस का बन्द छोड़ू। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो अस्तीक का माथा फूटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो धनात्री विद्या पलटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो चांद-सूरज की काया पलटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो महा-देव की पिण्डी फूटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो गरुड़ की जड तुटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो समुन्दर का पानी आटे। मेरा बांधा बन्ध ना छूटे, तो पाताल-वासुकी की माथा फूटे। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, चांद-सूरज की आन, धनात्री की आन, यहां रहे, तो श्री महा-दे अस्तीक की आन, छू ॥

६७. बन्द-बन्द, सुफेद बन्द। लोड़ू बन्द, सात बन्ध, नव छेद। हे बन्द कोनाचे वासुकी रायाचे, बन्द तोड़ ईखाचा नाश कर, तुज कावर कामाक्षा देवी की आन, छू ॥

६८. अहु बन्द छोड़ू, घूर बन्द छोड़ू, हनुमन्त छोड़ू, जोगी दत्त आम्ही छोड़ू, घूर बन्द ॥

६९. तिन घड़ी का बन्द छोड़ू। तिन त्रि-भुवन का बन्ध छोड़ू। तिन से साठ बरस का बन्ध छोड़ू। मेरी आन, मेरे गुरू की आन, ईश्वर-पार्वती की आन, चांद-सूरज धनात्री की आन, पाताल-वासुकी की आन। सदा से रहे, तो श्री महा-देव आस्तीक की आन, छू ॥

६९. छोटी नागीन दीड भीत, तवलक घुमे मुंगलती। छोटी फूले झुनक जाय, पद्मीन भूल जाय। मुपर पड़े जाट, जागता जीव संभाल, छू ॥

विशेष—अगर किसी की जुबान सांप काटने पर बन्द हो जाती है या दांत-पर-दांत चिपक जाते हैं, तब उक्त मन्त्र का 'प्रयोग' कर 'विष' - ग्रस्त व्यक्ति की चिपकी हुई दाढ़ या बन्द मुंह को खोल सकते हैं।

दो सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण व्यास
कोट डीडवाना (राजस्थान)-३४१३०३

अर्बुदाचल (माउण्ट आबू) पर्वत के निकट 'सिरोही' रियासत के अन्तर्गत एक गाँव है 'भराणा'।। इस गाँव में सोलहवीं शती के समय एक सिद्ध पुरुष हुए थे। स्व. खङ्गारराम जी राज-पुरोहित की कृपा से मुझे उक्त सिद्ध पुरुष द्वारा लिखित पुस्तक में से कुछ 'प्रयोग' प्राप्त हुए। उनमें से दो शाबर 'प्रयोग' सर्वथा सही हैं। प्रारब्ध के संयोग के साथ मैंने कई बार इन प्रयोगों का 'चमत्कार' देखा है।

उक्त 'प्रयोग' की क्रियाएँ ४९ दिनों की हैं। ४९ दिनों तक एक समय 'जौ के आटे' की रोटी और 'चँबलाई' (हरे पत्ती) का शाक, अपने हाथ से बनाकर, केवल एक बार भोजन करना होता है। सफेद वस्त्र पहनना होता है। झूठ न बोलना चाहिए। भोजन करते समय, पानी पीते समय, लघु-शङ्का, शौच आदि के समय 'मौन' रहना चाहिए। भोजन करने के बाद आचमन-कुल्ला आदि करके मन्त्र का ६० बार 'जप' कर ले, फिर बोले। इसी प्रकार, लघु-शङ्का या शौच-निवृत्ति के बाद मन्त्र का ६० बार 'जप' कर ले, तब बोले।

सोते समय भी न बोलना चाहिए। पहले मन्त्र का ६० बार 'जप' करे, तब बोले। यदि निद्रा आ जाती है, तो निद्रा से जगने पर पहले ६० बार 'जप' कर ले, तब बोले। दोनों मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) ॐ बिआलिया आसुत का सुत कास्तु स्वाहा।

(२) ॐ वलाई आरत की रुत करु स्वाहा।

इन मन्त्रों का देवता २१ दिन के बाद २७ वें दिन तक दृष्टान्त-रूप में आता है। २७ वें दिन से ३५ वें दिन तक अपना रूप दिखाता है, जिससे भय-भीत नहीं होना चाहिए। ३५ वे दिन के पश्चात् ४१ वें या ४९ वें दिन में वह 'जोगी' अथवा 'फकीर' के रूप में आएगा। 'प्रयोग'-कर्ता से लोबान, धूप, अतर या सुगन्धित वस्तु की माँग करेगा,

(शेष पृष्ठ ३८ के नीचे)

शत्रु-संहारक शावर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : एक साधक

[१]

ॐ नमो, आदेश गुरू को। काला भेरू - कपिल जटा। भेरू खेले चौराह-चौहट्टा। मद्य-मांस को भोजन करे।

जाग-जाग से काला भेरू। मात कालिका के पूत ! साथे जोगी जङ्गम और अवधूत।

मेरा वैरी (अमुक) तेरा भक। काट कलेजा, हिया चक्ख। भेजी का भजकड़ा कर। पाँसला का दाँतन कर। लोहू का तू कुल्ला कर।

मेरे वैरी···(अमुक) को मार। मार-मार तू भसम कर डार। वाह-वाह रे काला भेरू ! काम करो बेधड़क - भरपूर।

जो तू मेरे वैरी दुश्मन (अमुक) को नहीं मारे, तो मात कालिका का पिया दूध हराम करे। गाँगली तेलन, लूनी चमारन का—कुण्ड में पड़े।

वाचा, वाचा, ब्रह्म की वाचा, विष्णु की वाचा, शिव-शङ्कर की वाचा, शब्द है साँचा, पिण्ड है काचा। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र ! इसी वक्त। ॐ हूं फट्।

विधि : रात्रि को दस बजे के बाद कड़ुए तेल का दीपक जला कर बैठे। सामने भैरव की प्रतिमा या चित्र हो। मन्त्र पढ़कर एक

(पृष्ठ ३७ का शेषांश)

जिसे देना नहीं चाहिए। सुगन्ध (खुशबू) वाली वस्तु देने से 'प्रयोग' की शक्ति नष्ट हो जाती है और 'प्रयोग' फिर दुबारा करना पड़ता है। जोगी या फकीर - रूपी मन्त्र के देवता को 'प्रयोग' - कर्त्ता जहाँ भेजेगा, वहाँ जाएगा। 'प्रयोग'-कर्त्ता जो वस्तु मँगाएगा, वह लाकर देगा। मेरे विचार में वस्तु मूल्य देकर मँगाई जाएगी, तो प्रायश्चित्त नहीं होगा।

विशेष—'प्रयोग' के उपरान्त कोई अनुचित कार्य कदापि न करे। धर्म-पुण्य ही करता रहे ! अन्यथा 'क्रिया'-सिद्धि चली जाएगी।

नींबू खड़ा काटे। १०८ बार। ऐसा ही ग्यारह दिनों तक करे। १२ वें दिन १२ 'बटुक'– छोटे-छोटे ब्राह्मण बालकों को भोजन कराए और उन्हें दक्षिणा दे। रात्रि को हवन करे। सम्भव हो, तो यह हवन श्मशान में सन्ध्या के बाद करे। १३ वें दिन सुबह जल्दी श्मशान जाए और उक्त हवन की भस्मी, जो भी चिता वहाँ अधजली या जली हो, उसमें डाल दे। उस चिता पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प एवं कुछ मीठा प्रसाद छोड़कर नमस्कार करके चला आए।

[२]

तुमसे अरज करूँ, ऐ हो मात कालिका !

मोहि जो सतावे, सुख पावे न आठों याम। वाको तुम भक्ष लेओ, मेरी मात कालिका ! तुमसे अरज करूँ...।।

हाड़ तो हविष लेओ, खाल को खविष लेओ, गले पहिनो मात ! आँतन की जालिका। तुमसे अरज करूँ...।।

क्रोध करी धाओ, शीघ्र धाओ मात ! मेरे शत्रु...(अमुक) को गिराओ मात ! वाके रुधिर से नहाओ, टीका लगाओ रक्त-लाली का। तुमसे अरज करूँ...।।

देख के स्वरूप तेरा, योगिनी प्रसन्न होय। लागे वाँके घाव, पाके वाँके पांव। वाको अङ्गहू पिराय, वाको बालक मर जाय। मेरा दुःख न सहो अब मात कालिका ! तुमसे अरज करूँ...।।

विधि : रात्रि को दीपक जलाकर कम-से-कम १०८ पाठ नित्य करे। एक व्यक्ति के चाचा ने उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति हड़प ली थी और उसे घर से निकाल दिया था। उसने कालिका - मन्दिर में २१ दिनों तक ११ माला प्रति-दिन जप किया। कुछ ही दिनों बाद उसका काका कुसङ्ग में फँसकर दीन-हीन हो गया। साथ ही उसके दोनों पैरों में फोड़े हो गए, जो किसी प्रकार ठीक नहीं हुए। अन्त में यम-लोक ही पहुँच गया।



शाबर आँकड़े मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सोमदत्त शुक्ल
जानकी कुण्ड, फैजाबाद (उ. प्र.)

बिच्छू का विष उतारने का आँकड़ा

बिच्छू-बिच्छू कै जाती ? गौरा कहे अठारह जाती। छः कारी, छः पीली, छः दूध की पखारी। कच्चा करवा शरबत भरे। सै गौरा के आगुर धरे। ज्यों - ज्यों बिच्छी करे पुकार, त्यों - त्यों बिच्छी करे उतार। दोहाई महादेव की। तेरी शक्ति, तेरे आँकड़े मन्त्र की शक्ति। फुरे मन्त्र, श्रीवाचा।

विधि : किसी 'पर्व' पर लोबान की धूप देकर मन्त्र को २१ बार 'जप' कर, सिद्ध कर ले। तब, आवश्यकतानुसार 'प्रयोग' करे।

साँप का विष उतारने का मन्त्र

चन्दा-चन्दा, महेश्वरी चन्दा। कील पलटे, मन फहराए। हाँकौं देव निरञ्जन, बरबस करे खुदाय। तेरी शक्ति, तेरे आँकड़े मन्त्र की शक्ति। फुरे मन्त्र, श्रीवाचा। तेज 'सम्भार' विष खर रहे।

विधि : उपर्युक्त बिच्छू मन्त्र की भाँति पहले सिद्ध करे। फिर, आवश्यकतानुसार हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़कर मुख पर छींटा मारे। मन्त्र में 'सम्भार'-शब्द बहुत जोर से बोले।

पीपल की खपट्टी कानों में लगाकर इस मन्त्र को पढ़कर, मुख पर छींटे मारने से 'प्रेत - बाधा', होने पर विष - ग्रस्त व्यक्ति स्वयं बताता है।

चौकी (रक्षा-कारक) मन्त्र

दहिने नरसिंह की चौकी। बाँएँ हनुमन्त की चौकी। पीछे भव-नन्द की चौकी। छाती बैठ मुहम्मदा वीर की चौकी। मेरी दी न टरे, चाहे जुग टरि जाए। तेरी शक्ति, तेरे आँकड़े मन्त्र की शक्ति। फुरे मन्त्र, श्रीवाचा।

विधि : बिच्छू मन्त्र की तरह शरीर-रक्षा, प्रेत - बाधा हटाने हेतु 'प्रयोग करे।

नजर टोना का मन्त्र

ऊँचा चबूतरा, चौगड़ा अहिबरन चरावें गाय। नजर झारौं (पशु - मनुष्य) की नजर पराइ जाय। जाही की नजर, ताही को खाय। मेरे झारे नजर दूरि होइ जाए। तेरी शक्ति, तेरे आंकड़े मन्त्र की शक्ति। फुरे मन्त्र, श्रीवाचा।

अग्नि बाँधने, थनैली झारने का मन्त्र

कारी चिरई चुनगुनू, विष का मन्नो खाय। नाम सुमेर गनेश का, विष पानी होइ जाय। तेरी शक्ति, तेरे आंकड़े मन्त्र की शक्ति। फुरे मन्त्र, श्रीवाचा।

विधि : बिच्छू मन्त्र की भांति।

नजर टोना झाड़ने का मन्त्र

टोना-टोना कहां चले ? चले बड़ जङ्गल। बड़े जङ्गल का करने ? बड़े रुख का पेड़ काटे। बड़े रुख कै पेड़ काट के का करबो ? छप्पन छुरी बनाइब। छप्पन छुरी बना के का करबो ? अगवार काटब, पिछवार काटब, नौहर काटब, सासूर काटब, काट - कूट के पह्व बहाइबै, तब राजा बली कहाईब।

विधि : 'दीपावली' या 'ग्रहण'-काल में एक दीपक के सम्मुख उक्त मन्त्र का २१ बार 'जप' करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर भभूत से झाड़े, तो नजर-टोना दूर होता है।

प्रस्तुत-कर्त्ता : चम्पा देवी
सीता कुण्ड, फैजाबाद (उ. प्र.)

लक्ष्मी-प्राप्ति प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'तन्त्र-शास्त्री' श्री अनन्तदेव चन्दुलाल जोशी
मलाड, मुम्बई (महा-राष्ट्र)

ॐ नमो आदेश गुरू को। नमो सिद्ध गणपति - प्रसादात् विघ्न-हर्तं गणपत गणापत वसो मसाण। जो फल चीहुं, सो फल आण। पञ्च लाडुं, सिर सिन्दूर। रिद्धि-सिद्धि आण। गौरी का पुत्र सिंहासन बैठा। राजा कँपे, प्रजा कँपे। द्रष्टे राजा सिम चांपे। पञ्च-कोष पूर्व-पश्चिम से आण। उत्तर से आण। दक्षिण से आण। इतनी कर रिद्धि-सिद्धि मारे घेर द्वार आण। राजा - प्रजा अभि मेरे पड़े पांव, न पड़े, तो लाजे मैया गौरी। जो मैं देखुं गणेश बाला कर मन्त्र का सत की फट्-फट् स्वाहा।

विधि : उपर्युक्त मन्त्र को पहले काल-रात्रि, वीर-रात्रि, रवि-पुष्यामृत, गुरु-पुष्यामृत अथवा अमृत-सिद्धि-योग में १६०० बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर प्रयोग करे। इससे लक्ष्मी की प्राप्ति और वाक्-सिद्धि की प्राप्ति होती है।

भूतादि-दोष-निवारण प्रयोग

नमो आदेश गुरू को। सात भवानी कालिका। बार वर्ष कुमार। एक माई परमेश्वरी, चौदह भुवन द्वार। दो पांख निर्मली, तेरह देवी-देवा। अष्ट-भुजा परमेश्वरी, ग्यारह रुद्र-सेवा, सोल कला सम्पूर्णा। तीन नयन भरपूर। दश-नाम, दश अवतार, पाँच देव रक्षा करें। नव-नाथा चौरासी सिद्ध, षट्-दर्शन पाइए, पन्द्रह विधि जाण। चार वेद वखाणिए, काली करे कल्याण।

विधि : उपर्युक्त मन्त्र गुरु-गम्य है। सिद्ध-रात्रि, दारुण-रात्रि अथवा काल - रात्रि में सिद्ध करने से भूतादि दोष का निवारण होता है।

● ● ●

सिद्ध शाबर नवक

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामशङ्कर उपाध्याय
उप-डाकपाल, सिमरी, बक्सर (बिहार)

प्रस्तुत शाबर - मन्त्रों में 'जप' की आवश्यकता नहीं है। मन्त्रों को पूर्णतः कण्ठस्थ करके 'सिद्ध - योग' (जैसे, नव - रात्र, होली, दिवाली या 'ग्रहण' - काल) में मन्त्र पढ़ते हुए ७ बार धूप या घी-शाकल्य से 'हवन' करे। प्रत्येक पर्व में 'हवन' द्वारा मन्त्र जाग्रत करते रहें।

(१) शरीर-रक्षा मन्त्र

ऐठक बांधो, बैठक बांधो, बांधो अस्सी दाई। पूरव बांधो, पच्छिम बांधो, साढ़े तीन हाथ की काया बांधो। दोहाई गौरा-पार्वती की, सत् गुरु के बन्दे पांव।

(२) चोट (चमक-दर्द) झारने का मन्त्र

जमीर बो—जमीर बो, जमीर कहां गइलन ? जमीर गइलन गङ्गा-पार। घर में समाइल चोर, काटिले बांस के पोर। भगब तऽ भागऽ नातऽ काटी बांस के पोर। दोहाई ईश्वर गौरा-पार्वती के।

बिधि : छुरी की धार से झारे। दर्द कम हो जायगा। तीन दिन बासी मुँह झारे।

(३) प्रसूति-दर्द दूर करने का मन्त्र

खैरा खैर बिख, पिए शत्रु ओकरे बिख। दोहाई ईश्वर गौरा-पार्वती की।

विधि : एक हत्थी जल उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रसूता को पिलाए, तो शीघ्र ही प्रसव-दर्द दूर हो जाता है और प्रसव सहज ही हो जाता है।

(४) आधा सीसी दर्द दूर करने का मन्त्र

आधा सीसी शीत बसन्त में, कोपला बथे कपार। माथे टीका आन दियो, सीसी गए पाताल। दोहाई ईश्वर गौरा-पार्वती।

विधि : माथा पकड़ कर झारे या शुद्ध राख अभिमन्त्रित कर माथे में लगा दे।

(५) थनैलों दूर करने का मन्त्र

थान झारो, थनैली झारो। सीता झारऽ सीत के। हम झारीं आपन थनैली, फलनिया (रोगी का नाम) के लाने विशेष। दोहाई ईश्वर गौरा-पार्वती के।

विधि : रोगी स्त्री का जो स्तन हो, उसका उल्टा अर्थात् रोगी स्त्री का यदि बांयां स्तन हो तो अपना दाहिना और रोगी स्त्री का यदि दाहिना स्तन हो, तो अपना बांयां स्तन चाकू से झाड़कर जमीन पर काटे।

(६) हब्बा-डब्बा (पसली चलना, निमोनिया में)

जमीर बो—जमीर बो, जमीर कहां गइलन ? जमीर गइलन गङ्गा पार। का करे गइलन, कोइला काटे गइलन। से कोइला कांहे के, छुरिया बनावे के। ऊ छुरी कांहे के ? नजर काटो, दीठ काटो, मूठ काटो, भूत-बैताल काटो। हब्बा-डब्बा, दीठ-मूठ, पकला-फूंकला, काट - कूट समुन्दर में भसाओ। दोहाई ईश्वर, गौरा - पार्वती माई की दोहाई।

विधि : चाकू या हँसुवा से झाड़कर जमीन पर काटे।

(७) टोना और भूत-प्रेत झाड़ने का मन्त्र

आट मोहो, बाट मोहो, कुआं पनिघाट मोहो। दर मोहो, दरबार मोहो। आछी-कुछी बारा बाघिनी के, छनान काल के, बेड़ी काट के, धर्म के बेड़ी बांध के, लोह भार उतारि के, फूल भार चढ़ाइ के। मोर विद्या ना, गुरू के विद्या। कांवरू के सीख, नैना जोगिन के दोहाई। ईश्वर गौरा-पार्वती माई के दोहाई।

विधि : भभूति अभिमन्त्रित कर ललाट पर लगावे।

(८) भयानक मार्ग में भूत-प्रेत-रक्षा-मन्त्र

रास्ते मुझे खुदा कस्त दीदम गुम सदी की राशि।

विधि : तीन बार पढ़कर ताली बजा दे, भय दूर होगा।

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

शाबर-मन्त्र-वल्लरी

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ
अध्यक्ष, 'शाम्भवी तान्त्रिक शोध-संस्थान', १०८ चकराघाट, सागर-२

१. कुश्ती जीतना तथा अखाड़ा बाँधना

ॐ महावीर रणधीर बाँके पहलवान, आकाश बाँध, पाताल बाँध, अखाड़े के चारों कोने बांध, दुश्मन का सीना बांध, हाथ बाँध, पाँव बाँध, निगाह बाँध, इतने बांध के जेर न करे, तो माता अञ्जनी का दूध हराम करे, राजा रामचन्द्र जी की दुहाई ।।

विधि : श्री हनुमान जी के सामने अगर-बत्ती जलाकर बैठकर २१ दिन तक नित्य १०८ जप करे। कुश्ती के पहले अखाड़े की मिट्टी एक मुट्ठी में लेकर उस पर ५ बार मन्त्र पढ़कर सामनेवाले पहलवान को मारे। अखाड़ा बँध जाएगा और सामनेवाला परास्त होगा।

२. अखाड़ा खोलना

उल्टा घोड़ा, उल्टा पीर। उल्टा चले मुहमदा पीर। मैं कहूँ अखाड़े को खोल, न खोले तो बीबी फातिमा की आन, सुअर की चर्सा पर नमाज पढ़ै ॥

विधि : लोबान की धूनी देकर ७ दिनों तक नित्य १०८ बार जप करे। आवश्यकता होने पर इसे पढ़ते हुए अखाड़े के बीच में खड़े होकर चारों तरफ घूम जाने पर अखाड़ा खुल जाएगा।

(पृष्ठ ४४ का शेषांश)

(६) नजर-टोना झारने का मन्त्र

आकाश बांधो, पाताल बांधो, बांधो आपन काया। तीन डेग की पृथ्वी बांधो, गुरू जी की दाया। जितना गुनिया गुन भेजे, उतना गुनिया गुन बांधे। टोना टोनमत जादू। दोहाई कौरू कमच्छा के, नोनाऊ चमाइन की। दोहाई गौरा-पार्वती की, ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि : नमक अभिमन्त्रित कर खिला दे। पशुओं के लिए विशेष फल-दायक है।

३. देह बाँधना

बार राखै बारका, सीस राखै सोखा बीर। नाड़ी राखै नाहर सिंह, कपाल राखै जोगनी। आगा राखै इन्द्र सिंह, पाछा राखै भीम सिंह। बारा कोस अगाड़ी राख, बारा कोस पिछाड़ी राख। तू जो कहै गौरा, मेरा प्रण न राखै, तो गौरा पारबती महा-देव की आन ॥

विधि : २१ दिन तक नित्य १०८ माला जप करे। बाइसवें दिन रात्रि में श्मशान में बारका, नाहर सिंह और सोखा वीर को अण्डा और शराब, जोगनी को नीबू, शराब और सिन्दूर, इन्द्र सिंह और भीम सिंह को ७-७ प्रकार की मिठाई, उड़द के बड़े और शराब अर्पित करे। यह क्रिया केवल एक बार ही करने से जीवन भर काम देगी। नित्य एक बार मन्त्र पढ़ने से सर्व-विध रक्षा होगी। जादू-टोना, भूत-प्रेत, अभिचार आदि का कोई असर नहीं होगा। जङ्गल में पढ़ने पर जानवरों से रक्षा होगी। शत्रुओं से घिर जाने पर पढ़ने से शत्रु भय-भीत होकर भाग जाएँगे।

विशेष—यही मन्त्र 'शाबर मन्त्र संग्रह, भाग ३' में 'शाबर मन्त्र-मुक्तावलि' के क्रमाङ्क ४५ पर भी प्रकाशित है, किन्तु दोनों में कुछ अन्तर है। दोनों मन्त्रों की विधि भी अलग-अलग है। अतः दोनों को अलग-अलग ही सिद्ध करना होगा।

४. विविध कीलन

भय कीलूं, भैंसासुर कीलूं। कीलूं अपनी काया। जागता मसान कीलूं, जिसकी बैठूं छाया। बलिहारी मुहम्मदा बीर की, कीलूं पवन बावरी, मन चाहे जहां डोलूं, दुष्ट की मुष्ट कीलू। मेरे कीले म कीलै, तो अपनी मां के सङ्ग हराम करे, दुहाई मुहम्मदा बीर की ॥

विधि : २१ दिन तक नित्य १०८ जप करे। जरूरत के समय काली उड़द के दानों पर २१ बार पढ़कर फेंक दे, तो कीलन हो। २१ बार अभिमन्त्रित कर सुगन्धित अगर-बत्ती जला दे। जहां तक अगर-बत्ती की खुशबू जाएगी, वहां तक दृष्टादृष्ट का कीलन होगा। मन्त्र पढ़ते हुए शत्रु की तरफ फूंक मार दे, तो वह भी अहित नहीं कर सकेगा।

५. भूत-प्रेत पकड़ना तथा झाड़ना

जभी बुलाए, तब न आए और आए आधी रात, लौंग सुपाड़ी नारियल। बीरा लेत अकास, धाय बीर आकास जाय और धाय बीर पाताल, धाय बीर चोटी गहै, भूत पकड़, देव पकड़, देवी पकड़, चुड़ैल पकड़, किए कराए को पकड़, जादू - टोना को पकड़, मरही मसान को पकड़, कब्जे में करके ले आ। इतना काम न करै, तो बैहा नारसिङ्ह न कहलाय, हनुमान की हङ्कार ॥

विधि : पान का बीड़ा, लौंग, सुपारी और नारियल से पूजन करके घी की आहुतियां देते हुए एक सप्ताह तक नित्य १०८ जप करे। ७ काली मिर्च के दानों पर ७ बार मन्त्र पढ़कर प्रेत-ग्रत व्यक्ति को खिलाने से प्रेत बोलता है। उसकी बात सुनकर उसका उचित समाधान करे। मोर-पङ्ख से ७ बार मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ने से भूत-प्रेत, जादू-टोना तथा अभिचार का नाश होता है।

६. भूत-प्रेतादि बांधना तथा झाड़ना

बाद करत बादी चलै, नौ सौ ढाल मढाय। जातै मारै बादिया औ करै बदिनियां रांड़ ॥ पांच बरस का बालक मारै, गर्भ करै अहार। देव को बांध, देवी को बांध, भूत को बांध, चुड़ैल को बांध ॥ किए-कराए को बांध, गली-घाट को बांध। कब्जे में कर लाव, इतना काम न करै, तो बादी भयङ्कर न कहलाय, हनुमान की हङ्कार ॥

विधि : सरसों के तेल का होम देकर ११ दिन तक १०८ जप करे। प्रयोग क्रमाङ्क ५ के अनुसार करे।

७. विपरीत चालन

ॐ नमो आदेश गुरू का, एक ठौ सरसों सोला राई, मोरो पठवल कोरो जाई। खाय-खाय पड़ै मार, जे करै ते मरै। उलट विद्या ताहीं पर पड़ै। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, तो हनुमान का मन्त्र सांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। दुहाई माता अञ्जनी की।

विधि : १ दाना सफेद या पीली सरसों, १६ दाने राई और छोटी-छोटी २-३ डली नमक की लेकर मूठी में बन्द करके १ बार मन्त्र पढ़े और १ फूंक मारे। इस प्रकार ७ बार फूंक मारे। फिर सिर पर ७ बार घुमाकर जलती आग या गन्दे स्थान में फेंक दे।

तत्काल अभिचार करनेवाले पर लौट जाएगा। इसी विधि से भूत-प्रेत भी उतारे जाते हैं। कई बार का अनुभूत है, किन्तु मैं इसे अधोलिखित रूप में जपता हूँ। यह मेरा सैकड़ों बार का अनुभूत प्रयोग है—

ॐ नमो आदेश गुरू का, एक ठो सरसों सोला राई, मोरो पठवल कोरो जाई, खाय-खाय पड़ै मार, जे करै ते मरै, उलट विद्या ताही पै पड़ै। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। दुहाई श्री दक्षिणा-काली की ॥

अपने इष्ट देवता की दुहाई लगाने से यह मन्त्र अपने इष्ट-देवता का बन जाता है और अधिक उग्र होकर काम करता है।

८. व्यापार-वर्धन

भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा। उठै जो डण्डी बिकै जो माल, भँवर वीर, सोखे नहि जाय ॥

विधि : पहले किसी शुभ मुहूर्त में घृत, गुग्गुल की धूप देते हुए १०८ जप कर ले। दूकान खोलकर सफाई करने के बाद काली उड़द के दानों पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर दूकान में फैला दे। कुछ दाने गद्दी के नीचे अवश्य डाले। प्रयोग रविवार के दिन से चालू करे। आवश्यकता के अनुसार ३-५ या ७ रविवार तक करे। प्रयोग रविवार से शुरू करे और समापन भी रविवार को ही करे। इससे व्यापार में आशातीत वृद्धि होती है। यदि दूकान बँधी हो, तो वह भी खुल जाती है। कई बार का अनुभूत है।

९. व्यापार-स्तम्भन

भँवर-वीर ! तू चेला मेरा, बांध दुकान कहा कर मेरा। उठै न डण्डी बिकै न माल, भँवर-वीर सोखे कर जाय ॥

विधि : क्रमाङ्क ८ के समान ही सारी क्रिया होगी। प्रयोग दूकान या व्यापार-संस्थान के बन्द होते समय ही करना होगा। यह भी अनुभूत प्रयोग है।

१०. विविध कार्य-साधक अम्बिका मन्त्र

ॐ आठ-भुजी अम्बिका, एक नाम ओङ्कार। खट्-दर्शन त्रिभुवन में, पांच पण्डवा सात दीप। चार खूंट नौ खण्ड में, चन्दा - सूरज दो प्रमाण। हाथ जोड़ बिनती करूं, मम करो कल्याण ॥

विधि : नित्य १०८ जप करके जो भी प्रार्थना की जाएगी, पूरी होगी । सिद्ध मन्त्र है, अलग से सिद्ध करना आवश्यक नहीं है । नित्य कुछ जप पर्याप्त है । कुछ प्रयोग निम्स-लिखित हैं—

चुटकी में राख लेकर ३ बार अभिमन्त्रित करके मारने से (१) लगी आग बुझ जाएगी । (२) भूत-प्रेतादि दूर होंगे । (३) बुखार उतर जाएगा । (४) नजर आदि दूर होगी । (५) शत्रु - नाशार्थ— १. नारियल, २. नीबू, १। पाव गुड़, १ पैसा भर सिन्दूर अगर - बत्ती और नीबू बंध सके, इतना लाल कपड़ा । शनिवार की रात में कण्डे की आग जलाकर पूर्वाभिमुख बैठकर कण्डे कीं राख १ चुटकी लेकर उस पर १ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की दिशा फेंके । ऐसा तीन बार करे । फिर कहे कि 'मेरे अमुक शत्रु का नाश करो ।' और १ नीबू काटकर आग पर निचोड़े । फिर शेष बचा नीबू और सिन्दूर कपड़े में लपेट कर रात भर अपने सिरहाने रखे और सबेरे पहर ३-४ बजे उसे शत्रु के घर में फेंक दे या किसी से फिकवा दे ।

नारियल, अगर-बत्ती और गुड़ किसी देवी-मन्दिर में चढ़ा दे । प्रसाद स्वयं न खाए । शत्रु का नाश होगा ।

११. वशीकरण

ॐ नमो फूल सुगन्धा । फूल ही बांधूं सात समुद्रा । अहो फूल छटियारा, चौंसठ जोगिनी खरा प्यारा । ए फूल ए दिन पाऊँ, सूती सुवासिनी सेजी बुलाऊँ । मुआ मड़ा मसान जगाऊँ, हाक करी उचाट जाऊँ । गलिहट मेरे पगे लगाऊँ । देखूँ गोरा भैरव ! तेरी शक्ति । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : होली के एक दिन पूर्व जिस स्थान पर होली जलती हो, शाम को होलिका को हल्दी - चावल से निमन्त्रण दे आए और दूसरे दिन होली जलने पर १०८ बार मन्त्र जपते हुए सिन्दूर और गूगल से होली में हवन करे । फिर जब भी, किसी भी फूल पर १ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री या पुरुष को सुँघाएँगे, वह वशीभूत होगा ।

१२. आत्म-रक्षा-मन्त्र

चन्दा बांधों, सूरज बांधों । बांधों गङ्गा माई । तेंतीस कोटि के देवता बांधों । हनुमन्त की राम दुहाई । मरघट का मसान बांधों ।

मन चाहे लड्डू खाऊं। पूजा करूं गणेश को। मन चाहे जहां चला जाऊँ। श्री हनुमान जी की राम दुहाई ॥

विधि : किसी भी मङ्गलवार को घी - गूगल का होम देते हुए १०८ बार जप करके सिद्ध करे। रक्षा के लिए मन्त्र पढ़कर नीबू काटकर अपने चारों तरफ निचोड़ कर फेंक दे। सर्व-विध रक्षा होगी।

१३. अति उग्र औघड़ मन्त्र

घोर-घोर महा-घोर, चन्द्र-घोर सूर्य-घोर। नौ लाख कोटि-देवता-घोर। ना घोर, तो मां का दूध हराम। बूचरनाथ अघोरी बाबा की दुहाई ॥

विधि : अगर - बत्ती जलाकर, तेल का होम देकर १०८ बार जप करने से काम करेगा। इनका शत्रु-नाशक प्रयोग हीं मेरे पास है। १००० जप नित्य २१ दिन तक करने से ये प्रत्यक्ष होकर सभी सिद्धियां भी देते हैं, किन्तु जरा - सी चूक होने से साधक पागल हो जाता है। अतः श्री गुरु - देव के प्रत्यक्ष निर्देशन में ही करने का साहस किया जाए, अन्यथा नहीं। इनका शत्रु - नाशक प्रयोग अधो-लिखित है—

शनिवार या रविवार को सुबह श्मशान जाकर किसी भी चिता को पीले चावलों से निमन्त्रण दे। फिर रविवार की रात में १ अण्डा, धूप, अगर-बत्ती, थोड़ा-सा मीठा तेल (तिल्ली या मूँगफली का तेल) और १ छटांक शराब लेकर श्मशान जाए। सामान चिता के पास रखकर नग्न होकर शराब का कुल्ला मुँह में भरकर चिता की ७ परिक्रमा करे। फिर अपने बाएं पैर की ठोकर मारकर चिता से एक अङ्गार बाहर निकाल कर उसे मुँह में भरी शराब के कुल्ले से बुझा ले और अलग सुरक्षित रख ले। फिर अण्डा, धूप और अगर - बत्ती चिता में छोड़ दे। तब उक्त मन्त्र तीन बार पढ़े और तीन ही बार तेल की आहुति चिता में दे। इसके बाद कपाल - क्रियावाले घड़े या आग ले जानेवाली हण्डी के टुकड़े पर शत्रु का नाम पहले निकाले गए कोयले से लिखकर उसी चिता में थोड़ा गरम करे और ठण्डा करके घर ले आए। जब इस शत्रु के नाम लिखे टुकड़े को आग में गर्म किया जाएगा, तब शत्रु को बुखार चढ़ेगा और ठण्डा करने पर

उतर जाएगा। नाम लिखा टुकड़ा तपाते समय चटखने पर शत्रु का नाश होगा। उक्त विधि से ही कोयले के स्थान पर मुर्दे की हड्डी निकाल कर, शराब से बुझाकर होम आदि करे। इसे शत्रु के घर में रखने से घोर उच्चाटन होगा।

१४. शत्रु-नाश के लिए मरहई मन्त्र

मरघट-मरघट मरी करै, खेद काल के पाछू परै। झिरहि-झिरहि एक नदी बहत है, मरहई बैठ नहाय। एकै मुर्दा गोद में लीनै, एकै के हाड़ चबाय। मरही दूध का पौवा पीजै, दूधन करै कलेवा। वाचा के बांधी धरती, कण्डा अस उतराय। मेरी पठई मरही, जहां पठऊँ, वहां जाय। जोगी संन्यासी की विद्या, टोर पसुरिया घुन करै। भूंज चिनरुआ खाय। सच्चा पूजा निरङ्कार के, सोरा सै मरी के हङ्कार। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : रविवार या बुधवार को शत्रु के द्वारा की गई दातून की फांक उठा लाए। बेसन (चने की दाल का आटा) का पुतला बनाकर दातून के २१ टुकड़े करके मन्त्र पढ़ते हुए अङ्ग-प्रत्यङ्ग में खोंसे। फिर मरहई का विधि-वत् पूजन करके पुतले को अभिमन्त्रित करे। मन्त्र - पाठ सहित जिस अङ्ग में खोंसा गया दातून का टुकड़ा पुतले में से निकाला जाएगा, उसी अङ्ग की पीड़ा से शत्रु का नाश होगा।

१५. हनुमान

निज ध्यान धूप, शिव वीर हनुमान, जटा - जूट अवधूत, अङ्ग जञ्जीर, लंगोट गाढ़ो। भूत को वश, परीत को वश, गदा तेल सिन्दूर चढ़े। आप देखे, तो सत्य की नाव नारसिंह खेवे। दुष्ट को लात बजरङ्ग देवे। भक्त की कड़ी आठ लाख अस्सी हजार वश कर। रावण की ठनाठनी, भक्त वीर हनुमान बारह वर्ष का ज्वान। हाथ में लड्डू, मुख में पान, सीता की गए खोज लगावन। मो सों का कहे, हनुमान ? धारता की नगरी पैठ, राज करन्ता, जा जल्दी से। इस प्रीत की दृष्टि निकाल के आवै, तो सच्चा सिजवार का हनुमान कहावै ॥

विधि : पहले गाय के शुद्ध घी से १०८ आहुतियां शनिवार के दिन देकर जगा ले। फिर कहीं भी प्रयोग करे। धारदार हथियार से झाड़े। भूत-प्रेत, जादू-टोना और नजर आदि दूर हो।

१६. विपरीत चालन

उल्टा तरकश उल्टा तीर, उल्टा चले मोहम्मदा वीर। भूत मार गठरी करे, ऊपर मार दो कुदक्के धरे। वाचा छोड़ कुवाचा चले, तो कुम्भी-पाक नरक में परै॥

विधि : शुक्रवार को लोबान की धूप देकर १०८ बार जपे। फिर चाकू या छुरी से झाड़ दे, तो की हुई विद्या उलट जाय।

१७. रोगों की झाड़नी

खेरे पै की आमली, अगल-बगल की डार। ऊपर मोती गा गहे, तर भैंसा रखवार। वा भैंसा न जानिए, पालै तेली कलार। नौ गगरा मद के पिए, नौ सौ बकरा खाय। सांझी बाबा को चीर-फार, शिव बाबा की जटा उखार। छत्तीस रोग हांक के न आवे, तो राजा भीम न कहावे॥

विधि : दशहरे या दीपावाली को १०८ घी के होम देकर जगाए। फिर ७ बार मन्त्र पढ़कर मयूर-पङ्ख, चाकू या अगर - बत्ती से झाड़ दे, तो सब रोग ठीक हों।

१८. गर्भ-स्तम्भन

शुद्ध बुद्ध को ठकुरा बांधो, गर्भ रहे जी ठहर पाके फूटे बीज गिरे। श्री रामचन्द्र जी, हत्या तोहे परे। ईश्वर तेरी साख, गोरा गौंडा बांध के नौ महीना राख। ताला झिन्ना न झरै, पट - पट बीधे ताल। लोहू जामुन दे गए, ब्रह्मा और मुरार। ऊँचे चढ़े न नीचे धँसे, धँसे तो महा-देव की जटन में परै। इतनी चुकरियाँ अमृत की भरीं, सो सीता के अङ्ग धरीं। राख कोख लक्ष्मण जती, नौ महीना के बाद लक्ष्मणकुमार की आन। विष्णु की आन, राजा वासुकि की आन॥

विधि : पहले दीपावली में १०८ होम घी - गूगल के देकर जगाए। फिर काले धागे का गण्डा बनाकर गर्भिणी को गले या कमर में पहनाए, तो गर्भ स्थिर रहे। बच्चा होने पर उतार दे।

१९. शत्रु-नाश

किल-किल करै, रक्त-मांस को खप्पर भरै। लै खप्पर माता के धरै। जातन मारे पाँखरी उड़तई लेय। प्रान चलत बेल नटनी मारे।

बोलतो देहौं मुरगा ऊपर मद की धार। घाट बांध, बीच में बेड़ा बांध। नदी-नाला बांध, रोगियों का कोठा बांध। घर की धिनौची बांध, मारियों के हाथ-पांव बांध। बोलता की जीभ बांध, निन्यान्नबे गुनियो के गुन बांध। इतनी बांधनी बांध के आवे, तो सच्चा माता का पूत कहावे ॥

विधि : पहले किसी शुभ मुहूर्त में १०८ जप तथा हवन से जगा ले। फिर श्मशान में शनिवार या मङ्गलवार से एक सप्ताह तक शत्रु के ध्यान सहित नित्य १०८ बार जपे। अन्तिम दिन जप के बाद हवन करे। हवन के बाद मुरगे की बलि देकर उसका रक्त-मांस तथा मद्य हवन-कुण्ड में अर्पित करे। इसी समय नारियल भी दे।

२०. भूत-प्रेतादि नाशक मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का। बीर बली हनुमन्त जी, मुगदर दाहने हाथ। मार-मार पछारिए परबत बांएँ हाथ। भूत - प्रेत अरु डाकिनी, जिन्न खबीस मसान। बचे न इनमें एकहू, निरङ्कार की आन। दुहाई अञ्जनी की, राजा रामचन्द्र की। दुहाई लक्ष्मण जती की। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : हनुमान जी के मन्दिर में मङ्गलवार से नित्य १०८ बार जपे और गूगल से हवन करे। अगले मङ्गलवार को सिन्दूर, लंगोटा, ध्वजा तथा रोट चढ़ाकर पूजन करे। मन्त्र से ७ बार अभि-मन्त्रित जल पिलाने या छिड़कने से रक्षा होती है।

२१. सिर-दर्द-नाशक मन्त्र

लङ्का में बैठ के माथ हिलावै हनुमन्त, सो देखि के राक्षस - गण पराय तुरन्त। बैठी सीता देवी अशोक वन में, देखि हनुमान को आनन्द भई मन में। गई उर विषाद, देवी स्थिर दरशाय। अमुक के नहिं कछु पीर, नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरिदासी चण्डी की दुहाई ॥

विधि : किसी भी मङ्गलवार को गूगल की धूप देकर १०८ बार जपे। फिर सिर पर हाथ रखकर ७ बार मन्त्र पढ़े।

निवेदन—मन्त्र १४ से २१ मेरे फुफेरे भाई श्री बिहारीलाल सोनी, २२६ इतवारी टौरी, सागर–२ की कृपा से प्राप्त हुए हैं। इस सङ्कलन में भी कुछ उग्र प्रयोग हैं, जिनमें सावधानी अपेक्षित है। ● ●

साधुओं, ओझाओं व तान्त्रिकों द्वारा प्राप्त

शाबर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. सूरजप्रकाश सारस्वत
ग्राम बड़ोटी, पो. रैल, जि. हमीरपुर (हि: प्र.)

१. रक्षा-पाल का मन्त्र

(१) जागो रघुवीर। जागो पौणाहारी। जाग पवनाहारी। जाग गुर पहाड़िया गुर - नाम सहाई, जिसकी महिमा किसी नहीं पाई। जागो पवन। जाग जोतांवाली, तेरे दर ते खड़े ने सवाली। धरती जागे, अम्बर जागे—जागे तिन्न लोक, तेंतीस करोड़ देवता जागे। जागे ब्रह्मा, जागे विष्णु, जागे शिव भण्डार। गुरु को बन्दगी, बन्दगी मानूं जहाँ पवनाहारी द्वार। घट-घट में बसो, रोम-रोम में वास। जय बाबा, बारम्बार नमस्कार॥

विधि : उक्त मन्त्र का प्रातः-सायं प्रति-दिन 'धूप'-ज्योति जलाकर १० माला 'जप' करे। यदि 'श्रद्धा' और लगन-पूर्वक 'जप' किया जाए, तो रक्ष - पाल ४१ दिनों के भीतर प्रकट होकर मनोभिलाषित वर देते हैं। अगर इतना 'जप' न कर सके, तो एक 'माला' प्रति-दिन छः मास तक 'जप' करे। इससे परिवार के सभी प्रकार के कलह-क्लेशों से छुटकारा मिलता है और सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है।

(२) जाग-जाग वापुए देया पुत्रा। काली-माई देया चेलया। महा-रुद्रिया देया जाया। लीलो बहना देया भाईया। ज्यूणिया-घुम्हारिया देया सज्जणा। हीरां गदड़ेटियां देया खसमा। घगरिया-नानिया देया दोतुआ। जाति-दा लुलाला भेड़ां-दा भाला जुआलिया सुहाला। धारा नगारा दूंगी भखारा, उत्थड़िया बखारा छण्डे दिआ धारा। तित करङ्गोड़े-दा बूटा, तिस एठ वासा तुम्हारा। जित्थु आई, मिलया मामटी हमारा। जूटा पट्टे दारा, ढाका निरबान हत्थां। उनसान लाड़ी लाम्मी पिठी किरड़ा। मैं रखबाला, गदड़ेटा भवानी - दा। सदे-आ औणा, भेजे-आ जाणा। मेरी शक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वर महा-देव का वाचा फुरे।

विधि : १ जल २ गन्ध, ३ अक्षत, ४ फूल, ५ धूप, ६ ज्योति, ७ नैवेद्य के रूप में हलुवा तथा ८ हाथ के काते हुए सूत का जनेऊ। यह सभी सामान लेकर पीपल के वृक्ष के नीचे रात्रि एक प्रहर के बाद और प्रातः तीन से चार बजे के बीच पूजनोपरान्त एक 'माला' 'जप' करे। 'जप' के बाद ज्योति साथ लेता आए और फिर घर में एक माला 'जप' करे। रविवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे 'जप' न करे, घर ही में दो माला प्रातः और सायं 'जप' करे। ४१ दिनों के भीतर रक्षा-पाल प्रकट होकर 'वर' प्रदान करते हैं। 'प्रयोग' को जहाँ तक सम्भव हो, गुप्त रखे। प्रति-दिन नियत समय ही 'जप' करे।

२. भैरों सिद्धि का मन्त्र

(१) भैरों ऐंडी, भैरों मैंडी, भैरों सबका दूत। देवी का दूत, देवता का दूत। गुरु का दूत, पीर का दूत। नाथों का दूत, पीरों का दूत। भैरों छड़िया कहाए जहाँ, सिमरूं तहाँ आए। जहाँ भेजूं, तहाँ जाए। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं छड़िया भैरों, तेरे इल्म का तमाशा।

विधि : श्मशान-घाट में भैरों के पूजन के उपरान्त १० माला ७ दिनों तक 'जप' करे। सातवें दिन, मांस - मछली और मद्य से 'आहुति' दे। फिर चौबाटे (चौराहे) में बैठ कर १० माला ७ दिन 'जप' करे। सातवें दिन उड़द के बड़े, मांस और मद्य की 'आहुति' दे। इसके बाद घर के एकान्त कमरे में सात दिन १० माला 'जप' करे और सातवें दिन उड़द के बड़े, बाकला और मद्य से 'आहुति' दे। इससे भैरों बाबा प्रसन्न होकर साधक को सभी प्रकार सहायता प्रदान करते हैं। किसी का अपकार न करे।

(२) काला भैरों कपली जटा। हत्थ वराड़ा, कुन्द वड़ा। काला भैरों हाजिर खड़ा। चाम की गुत्थी, लौंग की विभूत। लगे लगाए की करे भस्मा भूत। काली बिल्ली, लोहे की पाखर, गुरां सिखाए अढ़ाई अखर। अढ़ाई अखर गए गुरां के पास, गुरां बुलाई काली। काली का लगा चक्कर। भैरों का लगा थप्पड़। लगा-लगाया, भेजा-भेजाया, सब गया सत समुद्र-पार॥

विधि : होली, दिवाली अथवा ग्रहण के समय उक्त मन्त्र का एक हजार 'जप' करे। किसी को ओपरी (तान्त्रिक आभिचारिक) बाधा हो, तो लौंग, इलायची और विभूति बनाकर दे। लाभ होगा।

३. पीड़ा-निवारक मन्त्र

कहां से आया गुरु, कहां से आया चेला ? कहां से आया मुहम्मद-पीर ? स्वर्ग से आया गुरु, पाताल से आया चेला, मक्का - मदीना से आया मुहम्मद-पीर। साथ आए शङ्कर भोले, क्षण में जाए पीड़। चले मन्त्र, ईश्वर महा-देव का वाचा फुरे।

विधि : किसी अच्छे मुहूर्त से उक्त 'मन्त्र' का नित्य १०८ माला 'जप' करना प्रारम्भ करे। 'मन्त्र' सिद्ध होने पर सभी प्रकार की पीड़ा में विभूति से पीड़ा-स्थान को मन्त्र पढ़कर झाड़े।

४. अभिचार-नाशक मन्त्र

(१) अग्नि का घोड़ा, बिजली की लगाम, जहां चढ़े हनुमान वीर, पठान लाल खान-जवान। क्या करता आया ? भग्न के भसूढ़ी, कढ़ के कलेजा, उस दुश्मन का खाया। जिसने 'फलाने' पर वार चलाया। सवा घड़ी में उसका स्यापा पाया। देखां हनुमान वीर, पठान लाल खान-जवान, तेरे इल्म चोट का तमाशा। गुरों की शक्त (शक्ति), मेरी भक्त (भक्ति)। जहां पुकारूं, तहां खड़क। हिल्लिल्लाह - बिश-मिल्लाह हप हप हप ॥

विधि : किसी अच्छे मुहूर्त में १०८ माला 'जप' प्रारम्भ करे। सिद्ध हो जाने के बाद मन्त्र पढ़ते हुए रोगी को विभूति लगाए और थोड़ी-सी विभूति खिलाए। इससे सभी पर - कृत अभिचार दूर हो जाते हैं।

(२) हनुमान वीर बैठे मसान, जो मन भावे सो प्रमाण। पञ्जे अङ्गी, पञ्जें मुट्ठी। छेवां गुग्गल, होया प्रकाश। मोहनी-दोहनी दोनों बहनां, हत्थ में तक्की तेल-कड़ावां। तेल हमारे मुख में चढ़े। सार का तड़ाग, रूपे का लंगोट। हनुमान वीर सुत्ते तां जाग हमारे पास। भूत-प्रेत को मार। डाकिनी-शाकिनी को मार। जोगनी - मसानी को मार। लगे-लगाए को मार। गादे-गदेले को मार। राहिए-चौराहिए को मार। लोहले-सींडुओं को मार। हमारा मन्त्र गया काली के पास। काली का लगा चक्कर। हनुमान का लगा थप्पड़। सब लगा-लगाया गया सत समुद्र पार ॥

विधि : होली, दिवाली अथवा 'ग्रहण' के समय उक्त मन्त्र को १००० बार 'जप' कर सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकता पड़ने पर विभूति या लौंग-इलायची या सफेद गोल मिर्च/दक्खिनी मिर्च अभिमन्त्रित करके पीड़ा-प्रस्त व्यक्ति को दे। इससे सभी प्रकार के पर-कृत अभिचारों का नाश होता है।

(३) काली-काली, महा-काली। ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली। दोनों हाथ बजावे ताली। हड्किनी-डड्किनी को भस्म करे। अल्लाह-बिसमिल्लाह को भस्म करे। नौ नाथ, चौरासी सिद्धों को भस्म करे। नौ नारसिंह, सोलह सींडुओं को भस्म करे। बावन वीर, चौंसठ योगिनी को भस्म करे। अस्सी मसान, नब्बे भैरों को भस्म करे। लगे-लगाए को भस्म करे। भेजे - भेजाए को भस्म करे। चले काली का खण्डा, दुष्ट राक्षस को करे तबाह। जादू जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र फूंक कर करे स्वाह॥ चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं काली कलकत्तेवाली, तेरे इल्म चोट का तमाशा॥

विधि : पहले नित्य धूप-दीप आदि से माँ काली की पूजा करे। पूजनोपरान्त उक्त मन्त्र का १००० 'जप' करे। जब मन्त्र सिद्ध हो जाए, तब पर-कृत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र को दूर करने के लिए जल, गण्डा, लौंग, इलायची, विभूति अभिमन्त्रित करके पीड़ा-ग्रस्त व्यक्ति को दे।

५. गण्डा देने का मन्त्र

ओम नमो आदेश गुरु को। जागे गणेश देवता, मुहमदा वीर जागे। काले घोड़े को बांधो। काली घोड़ी को बांधो। अग्नि को बांधो। बिजली को बांधो। लगे-लगाए को बांधो। भेजे - भेजाए को बांधो। हाकिन-डाकिन को बांधो। सुलेमान - पीर पैगम्बर की होय दुहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वर महा-देव का वाचा फुरे।

विधि : पहले होली, दिवाली या ग्रहण के समय उक्त मन्त्र का १००० 'जप' करके सिद्ध कर ले। फिर तान्त्रिक बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित गण्डा-धागा देने से लाभ होगा।

६. सुरक्षा-कारक मन्त्र

इर्द - गिर्द या अली चौफिर्द मुस्तफा। मदद मेरी को पहुँचिए, पञ्च-पीर मूर्तजा। लाइल्लाह का कोट, इल्लाह की खाई। हजरत मुहम्मद रसूल की चौकी, अल्लाह की दुहाई॥

विधि : उक्त मन्त्र को नोचन्दी शुक्रवार अर्थात् जिस दिन वीरवार की रात्रि को शुक्ल पक्ष की द्वितीया हो, एक हजार बार 'जप' कर सिद्ध कर ले और सवा किलो 'प्रसाद' पञ्च-पीर के नाम से बांटे। 'प्रयोग' के समय अपने या रोगी के चारों तरफ उक्त मन्त्र पढ़कर चाकू से रेखा खींचे। इससे सभी प्रकार की बाधाओं से रक्षा होती है।

७. बाबा बालकनाथ का मन्त्र

(१) श्रीराम महा-राम, जगन्नाथ स्वामी। इक-इक नांगा, इक-इक निर्वाणी। उदासी बैरागी, कन्न पड़ाए। मुद्रां पाइयां, किलकां लाईयां। इक घर मंगेया, दूआ घर मँयेआ, तीजे घर पिहाई। लौंगां-लाईचीयां दी धूनी लाई। गुफा तेरिया दीपक वले, चौं कुण्ठां चाणन होए॥

(२) ओम नाथ नाथेश्वर बाबा बालकाय नमः।

विधि : उपर्युक्त मन्त्र की सिद्धि हेतु बट अर्थात् बड़ वृक्ष के नीचे अरने (उपले) की आग में मीठा रोट पकाए। उपलों की आग पर लौंग - इलायची और गाय के घी से निर्मित धूप-सामग्री रखे। ४१ दिन तक 'जप' करने पर बाबा जी प्रसन्न होकर 'वर' प्रदान करते हैं। फिर दोनों मन्त्रों से लौंग, इलायची, विभूति या गण्डा बना कर देने से सभी प्रकार की बाधाओं से रक्षा होती है।

८. बाबा बनखण्डी जी का मन्त्र

विशेष : शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ३, पृष्ठ ५३ पर बाबा बन-खण्डी जी का मन्त्र प्रकाशित है। यहाँ एक अन्य मन्त्र प्रस्तुत है—

बाबा बनखण्डी साहिब जी की मात्रा। बाबा बनखण्डी जी वन के राय। चोर न मुच्छे, बाघ न खाए। हमारा खेला और कोई खाए, वो पेट फाड़ मर जाए। छिन्न दाहिने, छिन्न बाँएँ, छिन्न-छिन्न आगे होय। अमर गुसाइँ सिमरिए, काया विघ्न न लागे कोय। चार दिशा बांधूं, पूर्व दिशा बांधूं, पश्चिम दिशा बांधूं, उत्तर दिशा बांधूं, दक्खिन दिशा बांधूं। आकाश की जड़ पाताल से बांधूं। भैंस का सींग बांधूं। घोड़े का पौड़ बांधूं। हाथी का दांत बांधूं। जल बांधूं, जलहर बांधूं। सिंह बांधूं, शार्दूल बांधूं। हरिहर टोला बांधूं, भील बांधूं, भीलनी बांधूं, तेलिया कस्तूरी बांधूं। ऐसे बांधूं, जैसे रामचन्द्र जी ने सेतुबन्ध पुल

बांधा। एक कोस बांधूं, दो कोस बांधूं, तीन कोस बाधूं, चार कोस बांधूं, पांच कोस बांधूं, छः कोस बांधूं, सात कोस बांधूं, आठ कोस बांधूं, नौ कोस बांधुं, नौ दूने अठारह कोस बांधूं, अठारह दूने छत्तीस कोस बांधूं। छत्तीस दूने बहत्तर कोस बांधूं, ऐसे बांधूं जैसे रामचन्द्र जी ने सेतुबन्ध पुल को बांधा। लगे-लगाए को बांधूं, भेजे-भेजाए को बांधूं। खादे-खुआए को बांधूं। मड़ी मसानी बांधूं, छत्तीस भूत बत्तीस खब्बीस बांधूं, चौंसठ योगिनी चौरासी परियां बांधूं, अस्सी मसान नब्बे भैरों बांधूं, नौ नाहरसिंह सोलह सींडू बांधूं। जाति - कुजाति के मन्त्र को बांधूं। हिन्दू-मुसलमान का मन्त्र बांधूं, मेरा बांधा न बँधे, तो सेतुबन्ध पुल टूटे। मोहनदास का लाकड़ा न टूटे, पुल टूटे तो टूटे। इति श्री बाबा बनखण्डी जी की मात्रा सम्पूर्ण भई॥

विधि : उक्त मन्त्र का जप शुभ मुहूर्त से प्रारम्भ करे। जल का लोटा समीप में रखे। गुग्गल धूप, गाय का घी तथा अच्छी 'हवन'-सामग्री लेकर हवन करे। 'जप' जितना ज्यादा होगा, मन्त्र की शक्ति उतनी ही बढ़ेगी। आवश्यकता पड़ने पर उक्त मन्त्र से विभूति इत्यादि अभिमन्त्रित करके देने से सङ्कट-नाश होता है।

९. खवाजा पीर का मन्त्र

(१) खवाजा खिज्र पीर। बाबा जन हाजीत पीरान पीर। मैं बालक तेरा, तू पीर मेरा। भर-भर छालियां वहांदा नीर। लौंग-सुपारी-जायफले दोहरी पूजा लै। गढ़ अजमेर का राजा, हिन्द का पादशाह सजमी कलीफ। हाकी सो मलङ्ग चले। खाकी सो मलङ्ग चले। रोड़ सो मलङ्ग चले। हुके-हुकाए को, खाऐ खुआए को, लगे-लगाए को, चौंसठ डायन - जोगन को भस्म करे। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं खवाजा खिज्र पीर, तेरे इल्म का तमाशा।

(२) गुरु सिमरां, गुरु साईं सिमरां, सिमरां बाबा जिन्दा। शीख सार - दा घोड़ा, वणेया उपर जीन। पुहांवदी उपर चढ़ेया, वाह बङ्गाला हाजिर बाबा जिन्दा। तीर के वीर को बन्द कर, लगे-लगाए को बन्द कर, जादु जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र बन्द कर। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥

(३) नीर के पीर को सलाम। खिज्र खवाजा के सिर सेहरा साजे। लौंग, सुपारी, घी का चिराग। खिज्र खवाजा तेरे दरबार

बले। खिज्र खवाजा देख नजर भरे। मेरी अर्ज धुर दरगाह में लगे। खिज्र गश्त, खिज्र मश्त। तोड़े कुल्फ, लिआवे रश्त। खिज्र का जलवा आवे, हमारी रश्त लिआवे। साखी सुलतान, जात का दीवान, करो मेरी मुश्किल आसान। जल में खवाजा सिमरूँ, बाहर सरबर पीर बन्दा। बन्दी सराहुंवदा, मेरा हजरत जाहर पीर। या मित्र, या उल्लास, करो कुल के कम रास। पहले मेरी मुराद हासिल करो, फिर जमीं पर कदम धरो। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं खवाजा खिज्र पीर, तेरे इल्म का तमाशा।

(४) ओमत का गुरु खबाजा। खबाजे का गुरु बाबा जैन। मंझ समुद्र देहरा बणेया। वणेया सच्चे साईएं-दा। अव्वल वणी, चौखण्डी सच्चे साईंए-दी। चाणन चौआ, गारा वणेया, इट लगी मुलतानी। हनुआ तेरा गारा ढोए, भैरों करे चिणाई। माई बीबी रँगे पीढ़े बैठे, कुच्छड़ खेले गीगा राणा। गीगे राणे दे सिर कगली सजे, पञ्जां पीरां दी निशानी। गीगे राणे दे हत्थ - खूंटी सज्जे, हजरत मुहम्मद की निशानी। मन्झ समुद्र तम्बू लगे, लहाशां छुट्टिया उआरे परे। मन्झ समुद्र काई फुल्ली, फुल्ली वेले सच्चे साईंए-दें। मन्झ समुद्र वेलम वट्टी, वट्टी सच्चे साईंए-दी। कुहमल घाणी पाई। खवाजें पीरें, रखी औणी जाणी। मेघु तेरा, अरजां करदा। अरजां गईयां, अरजां अईयां। रूहां गईयां, रूहा आईयां। निघठुआ चेला हवन करांदा, डीकां गईयां समाणे। भरे नगारे, धुरे नगारे। नीले झण्डे झुलदे। तुरही नरसिंगे वजदे। हे पठान के लड़के ! काला टोपु, काला वस्त्र। हाथ में रूल, हाथ में कुरान, हाथ में जञ्जीर। नीले बकरे जपें कराए, वड्डी-टुक्की हण्डियां पाए, हलाली मर्द कहाए। कलगी कुकड़ जपें कराए, वड्डी-टुक्की हण्डियां पाए, हलाली मर्द कहाए। हेठ वसन्त उपर निमक भरिया, हण्डिया गिल-गिल लाई। हुक्म होया लांगरियां, डूना-डूना बरताओ। बरताओ सच्चे साईंए-दा। कै लख घोड़ा, कै लख जोड़ा, कै लख चढ़े पलाण सच्चे साईंए-दा। सौ लख घोड़ा, सौ लख जोड़ा, सौ लख चढ़े पलाण सच्चे साईंए-दा। खवाजे पीर लहर-वहर, इक घड़ी, सवा पहर। आई बला को रद्द कर। सतर सौ बला तेरे नाम से गई टल। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, फुरे वाचा। देखूं खवाजा खिज्र पीर, तेरे इल्म का तमाशा॥

विधि : उपर्युक्त चारों मन्त्र खवाजा पीर के हैं। इन सभी मन्त्रों की विधि समान है। नीली कमीज, नीला तहमद धारण कर साधक बहती नदी के किनारे मुसल्ली बिछा कर लौंग, सुपारी, जायफल, लोहबान, धूप, दलिया, हलुआ, मीठा रोट, मलीदा या चूरमा, फूल, इत्र—यह सभी सामग्री लेकर बैठे। एक माला 'जप' करे। कभी-कभी नदी में बाढ़ आ रही है, ऐसा अनुभव होता है। इससे डरे नहीं। इस प्रकार ४१ दिनों तक 'जप' करे, खवाजा पीर की सिद्धि प्राप्त होगी।

१०. जादू-बन्धन मन्त्र

काला तीतर, भूरा चिड़ा। बांधूं आसन, बांधूं मड़ा। बांधूं जिन्न-भूत के डानू। परी चुड़ैल खेले। सती सीता के सिर जखनी चीरा। बांध गए हनुमन्त बीरा। नीला मेरा पहन के बड़ा दन्त कहाऊँ। चारों कुण्ठ कील कर बैठ गए हनुमान। चौकी सुलेमान की, दुहाई मुहम्मद रसूल की। अल्लाह-हिल्लिल्लाह हप-हप-हप।

विधि : पहले उक्त मन्त्र को ग्रहण, होली, दिवाली पर १००० बार 'जप' कर सिद्ध करे। फिर इस मन्त्र से गण्डा या विभूति अभिमन्त्रित करे।

टिप्पणी—उपर्युक्त सभी मन्त्र, मेरे अथवा मेरे परिचित व्यक्तियों के द्वारा अनुभूत हैं। जो भी साधक इन मन्त्रों का 'प्रयोग' करना चाहें, वह अपने गुरु-देव या किसी अच्छे साधक से विचार-विमर्श करके ही इनकी साधना करें। किसी का अपकार करने के उद्देश्य से कोई यदि इन मन्त्रों का 'प्रयोग' करेगा, तो वह उसके दुष्परिणामों के लिए स्वयं उत्तरदायी होगा।



शाबर-शब्द-कोष (भाग ४)

अचला—स्थिर, पृथ्वी। अजरा—बुढ़ापे के बिना। अम्बरी—हौदा, चन्दोवा। अर्ज—प्रार्थना, विनती, निवेदन। अलख—अगोचर, अनदेखा, अदृश्य। अस्तबल—घुड़साल। अहेरत—शिकार खेलना, मृगया। आपै आप—अपने आप, स्वतः। आभरण—आभूषण, जेवर, गहने। आय—आकर, आमदनी। उँगा—ऊगा, अपामार्ग। उबार—बचाना, रखाव। उर—हृदय, वक्ष-स्थल। ऊँगा—उदय हुआ, अपामार्ग, अद्धाधारा, लटजीरा। एतना—इतना। औसर—मौका, अवसर। कर—का, हाथ, राजस्व, हाथी की सूँड़, ओला, किरण, हस्त-नक्षत्र। करवा—कमण्डलु, कठारी, मिट्टी का बर्तन, करुवा। करामात—करिश्मा, चमत्कार। कानन—वन, जङ्गल। काया—तन, शरीर, देह। किहा—किया, कहाँ। कुण्डी—साँकल, अर्गला। खड़के—झनझनाना, बजना। खाक—राख, भस्म। गरवा—भारी, वजनदार, धीर, प्रतिष्ठित। गादी—गद्दी, गोद, सिंहासन, बैठक। गुणवन्ता—गुणी, होशियार। गुहार—पुकार, बुलाना। गेरू—लाल मिट्टी, गैरिक। गोहार—पुकार, बुलाना। गोहारि—दुहाई। घटवैया—घाटवाला, घाट का देवता, घाटिया। घनेरी—बहुत-सी, अधिक, घनी। चमर—चँवर, चामर, इसी नाम का एक पशु। चाम-चमड़ा, खाल, त्वक्। चील्ह—चील। चुन्न—चूना, चूर्ण, चूरन, आटा। चुरइल चुड़ैल, स्त्री-प्रेत। चूहड़ी—भङ्गिन, शूद्र जाति की स्त्री। जती—यती, संन्यासी, योगी, भिखारी। जर्द-पीला रङ्ग। जाई-बेटी, दुहिता, जाकर, जाती है। जाया—पैदा किया, पत्नी, स्त्री। जिमी—जमीन, धरती, भूमि। झगरा—लड़ाई, वैर-विरोध, विद्वेष। झलमल—चमकदार, चमक-दमक। टोपली—टोकनी (जिसमें मेहतर कचरा उठाते हैं)। तनय—पुत्र, आत्मज, सुत। तपुक—बन्दूक। तलाई—तलैया, छोटा तालाब। तलुआ—पैर के पञ्जे का निचला भाग। तिरिया—स्त्री, नारी, औरत। तीनिऊ—तीनों। तुमरी—तुम्हारी, तेरी। तुरङ्ग—अश्व, घोड़ा, शीघ्र-गामी। थापना—स्थापित करना, रचना, बनाना। दरियाब-समुद्र, सागर। देवतन—देवताओं। देशावरि—

परदेशी, दूसरे देश का। दोऊ—दोनों। नात—सम्बन्धी, हितैषी। नावा झुकाना, नवाना। नूर—शोभा, आभा, प्रकाश। नेवार—पलंग बुनने की सूती पट्टी। पलीत—मैला-कुचैला, भूत-प्रेत की एक योनि। प्रनामत—प्रणाम करते हैं। पाक—पवित्र, शुद्ध। पात—पत्ता, पत्र। पायाँ—पैर। पुन्न—पुण्य। बरकती—वृद्धि, सम्पन्नता, बचत। बहुरै—लौटे, फेरना, फिरता। बहोरे—दुहरावे, लौटावे। बादर—बादल, मेघ। बिछुरा—अलग हुआ, वियोग। बिरियाँ—समय, वक्त। बुझन्ते—पूछते, समझते हैं। बेपारी—व्यापारी, सौदागर। भया—हुआ। भाटी—भट्ठी, दाढ़ा। भाषन्त—बोलते हैं। मखानो—छोटा, एक जाति-विशेष हाथी। मण्डान—मण्डप। मद्धे—मध्य में, बीच में। मेध—मधु, मद्य, महुवे की शराब। मध्यान—मध्याह्न, दोपहर। मह—उत्सव, यज्ञ, भैंस, रोशनी। मही—धरती, मट्ठा, तक्र, छाँछ। मारिन—मारा। मेदनी—पृथ्वी, धरती। मुवा—मुर्दा, मरा हुआ। रहेउ—रहा, रहता था। राचे—प्रेम-विवश होना, मिलना। रिसे—रूठे, अकड़े, टपकना। रूपा—चाँदी, रजत। लबार—झूठा, गप्पी। लली—बालिका, लड़की; छोकरी। सती—पतिव्रता स्त्री, साध्वी, पार्वती, दक्ष प्रजापति की कन्या। सरस्यों (यूँ)—सरसों, राई, राजिका, सिद्धार्थ। सारिमसारा—सम्पूर्ण, एक-मात्र, सार का भी सार। सिरजनहार (रा)—निर्माण-कर्ता, सृष्टि-कर्ता। सुरा—शराब, मद्य, आसव। सूती—सोती हुई, कपास—निर्मित वस्त्र। हमरी—हमारी, हम सबकी। हाड़—हड्डी, अस्थि। ह्रिदे—हृदय में।

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री भैरवानन्दनाथ, सागर (म. प्र.)

शाबर-मन्त्र-शब्दार्थ

(शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ५, पृष्ठ ५४ पर प्रकाशित शाबर-मन्त्रों के कठिन शब्द)

पौणाहारी—उड़ कर चलनेवाला। पवनाहारी—वायु के सहारे जिन्दा रहनेवाला। जोतांवाली—ज्वालामुखी माता। सवाली—याचक। चेलेया—शिष्य। सज्जणा—प्रेमी। दोतु—पुत्री का पुत्र।

भेड़ां दा भाला—भेड़ों का रखवाला। धारा—पहाड़ी। भखाड़ा—अग्नि के अङ्गारों पर दिया जानेवाला धूप। मामटी—मामा। खादे खुआए—अभिमन्त्रित करके खिलाई जानेवाली वस्तु। ऐंड़ी—अक्खड़-ओघड़। मैंढी—मस्त तबियत। वराड़ा—कुल्हाड़ा। गुत्थी—झोली। अखर—अक्षर। गुर—गुरू। भसूड़ी—पसली। स्यापा—शोक। मसान—श्मशान। कन्न—कान। पड़ाए—फड़वाए। किलकां—किलकारी। पिहाई—आटे की पिसवाई। लाईची—इलायची। वले—जले। कुण्ठां—दिशाएँ। चाणन—रोशनी। मुच्छे—चुराना। हाजीत—हज करनेवाला। पीरान पीर—पीरों का पीर। छालियाँ—लहरें। सिमरां—याद करना। मंझ—मध्य में। देहरा—मन्दिर। चौखण्डी—मकान। साईं—स्वामी। कुच्छड़—गोद। कगली—कल्लगी। लहाशां—डोरियाँ। ठीकां—सुगन्ध। समाण—आसमान। रूल—छड़ी। वड्डी टुक्की—काट-छाँट कर। कुकड़—मुर्गे। वसन्त—मसाला। डूना—दोना। पलाण—सेना। जोड़ा—रस्सी। वला—दुष्टात्मा। डानू—हाथ-पाँव।

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं. सूरजप्रकाश सारस्वत, हमीरपुर (हि. प्र.)